खंड 2

सं. 1

जनवरी - मार्च

2015

भाकृ अनुप
ICAR

के मा प्रौ सं
समाचार पत्र

सी. आई. एफ. टी
cift

इस अंक में

बैठक एवं कार्यशाला	1
प्रशिक्षण कार्यक्रम	3
आउटरीच कार्यक्रम	4
प्रदर्शनियाँ	5
जनजातीय कार्यक्रम	7
समारोह	9
कार्मिक समाचार	16
व्यक्तिगत	21

संपादकीय समिति

संपादक
डॉ. के. अशोक कुमार
प्रधान वैज्ञानिक

सदस्य
डॉ. एस. आशालता
वरिष्ठ वैज्ञानिक
डॉ. वी.आर. मधु
वरिष्ठ वैज्ञानिक
श्री वी. चन्द्रशेखर
वैज्ञानिक
श्रीमती आरती अशोक
वैज्ञानिक
डॉ. ए.आर.एस. मेनोन
मुख्य तकनीकी अधिकारी
डॉ. पी. शंकर
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

राष्ट्रीय परामर्श बैठक

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोचिन दिनांक 13 मार्च, 2015 को संपदा का संरक्षण एवं कार्बन फूटप्रिन्ट की कमी के लिए रिंगसीन मत्स्यन के प्रबंधन पर एक राष्ट्रीय परामर्श बैठक संचालित किया। डॉ. ई.जी. साइलस, पूर्व कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय, त्रिशूर और पूर्व कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय, त्रिशूर और पूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-के स मा अनु सं, कोचि इस बैठक का उद्घाटन किए जिस का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय तट में रिंगसीन मत्स्यन की प्रस्तुत तकनीकी स्थिति पर विचार विमर्श करना था। डॉ. साइलस अवलोकित किया कि मात्स्यिकी के विकास में मछुवारे अगवाई करना और समुद्री मात्स्यिकी संपदा के शोषण में केरल की भूमिका का महत्वपूर्ण स्थान रखना एक सच्चाई है। इस बैठक की अध्यक्षता डॉ. सी.एन. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं द्वारा की गई। इस बैठक में कुल 21 आमंत्रित सहभागी राज्य मात्स्यकी विभाग, अनुसंधान संस्थान एवं शिक्षा संबंधी भाग लिए।

समुद्री मत्स्य उत्पादन में रिंग सीनों के क्षेत्र के सहयोग पर डॉ. एम. शिवदास, प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के स मा अनु सं, रिंग सीन मत्स्यन प्रणाली का मूल्यांकन एवं वृद्धि पर डॉ. लीला एड्विन, प्रधान वैज्ञानिक तथा कार्यकारी प्रभागध्यक्ष, मा प्रौ, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं और जीवन चक्र मूल्यांकन और कार्बन फूटप्रिन्ट पर श्री पी.एच. डिजू दास, अनुसंधान सहायक, भा

डॉ. सी.एन. रविशंकर अध्यक्षीय भाषण प्रदान करना। मंच पर हैं : डॉ. पी. प्रवीन, डॉ. एम.आर. भूपेन्द्रनाथ, डॉ. ई.जी. साइलस और डॉ. लीला एड्वीन

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भाकृअनुप - केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौधोगिकी संस्थान
सिफ्ट जंक्शन, मत्स्यपुरी पी. ओ., कोचिन - 682 029
ICAR - Central Institute of Fisheries Technology
CIFT Junction, Matsyapuri P. O., Cochin - 682 029

कृ अनु प-के मा प्रौ सं द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया। प्रस्तुतिकरण में उठाए तकनीकी समस्यों पर सहभागियों द्वारा विचार विमर्श जिस का परिमार्जन डॉ. एम.आर. भूपेन्द्रनाथ, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं द्वारा किया गया। सहभागी महसूस किए कि इन मत्स्यन प्रणालियों को मानकीकृत करने की आवश्यकता है; रिंग सीनरों के लिए उपयुक्त अल्प लागत प्रयोक्ता अनुकूल सोनट प्रणालियों विकसित करने की आवश्यकता से असुरक्षित जैसे क्षेत्रों में आंशिक परिवर्तन के लिए उच्च टूट शक्ति के साथ उपयुक्त सामाग्रियों। यह भी महसूस किया गया कि रेशा कांच निर्माण इस्पात की तुलना में वैश्विक ताप, अम्लीकरण एवं इट्रोफीकेशन कम करने की उच्च संभावना को रखने के कारण अधिक उपयुक्त है। यह भी महसूस किया गया कि तकनीकी-आर्थिक विश्लेषण से अधिक फायदे मंद यान एवं गिअर संयोजन के पहचान की व्यवस्था के लिए आवरण सांख्यिकी का संकल्पना को सुधार करने की आवश्यकता है।

मात्स्यिकी क्षेत्र में अवसरों को तलाश ने पर राष्ट्रीय कार्यशाला

“मात्स्यिकी क्षेत्र में अवसरों को तलाश ने” पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला 20-21 जनवरी, 2015 को भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची में क्षेत्रीय प्रौद्योगिकी प्रबंध केन्द्र (जेड टी एम सी), एरणाकुलम और भारतीय निर्यातक संगठनों का महासंघ (एफ आई ई ओ), एरणाकुलम द्वारा संयुक्त रूप में आयोजित किया गया। यह कार्यशाला मात्स्यिकी क्षेत्र के 50 उद्यमियों, वैज्ञानिक समुदाय और व्यवसाय विकास पदाधिकारों को एक मंच पर एक साथ लायी। इस कार्यशाला का उद्देश्य समुद्री खाद्य उद्योगा में आर्विभवी प्रौद्योगिकियों की पहचान करने, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं में व्यवसाय उद्‌भवन केन्द्र के बारे में जानकारी सृजने और अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय व्यापार में चुनौतियों का समाधान करने के लिए भी थी।

यह कार्यशाला एस. प्रदीपकुमार, महा प्रबंधक, डी आई सी द्वारा उद्‌घाटित की गयी। अपने उद्‌घाटन भाषण के दौरान, वी प्रदीप अनुरोध किया भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के तकनीकी सहयोग से व्यवसाय परियोजनाओं को उद्यमी प्रारंभ करें, जिसे कि संस्थान के फायदों के लाभ को उठाया जाए और इस से समाज के बड़े भाग को मात्स्यिकी व्यापार सेक्टर में ईंधन नवोन्वेषण से फायदा उठाए। इस उद्‌घाटन बैठक की अध्यक्षता डॉ. टी.वी. शंकर, प्रभारी निदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं द्वारा की गई! डॉ. शंकर भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं में उपलब्ध उद्यम-तैयार प्रौद्योगियों की बड़ी मात्रा के बारे में जानकारी दिया और निजी उद्योग से अधिक तेज हिस्सेदारी की आशयकता को बताया। डॉ. जोर्ज नैनान, प्रधान अन्वेषक, जेड़ टी एम सी, स्वागत भाषण प्रदान किया और श्री सजीत कुमार, सहायक निदेशक, डी आई सी धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम दिन के तकनीकी सत्र में डॉ. जोर्ज नैनान द्वारा ‘मात्स्यिकी सेक्टर के क्षेत्र में मूल्यवर्धन और श्री के.जे. अरविन्द, अनुसंधन सहायक, जेड़ टी एम सी द्वारा व्यापार विकास में व्यापार उद्‌भवन की भूमिका’ पर भाषण प्रदान किए। सहभागी व्यापार उद्‌भवन कार्यालय कॉम्लेक्स और भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं परिसर में स्थापित पायलेट संयंत्र का दौरा किए। दूसरे दिन, डॉ. रेजीकुमार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संकाय, एफ आई ई ओ, “समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में निर्यात के अवसर” पर एक भाषण प्रदान किया और डी आई सी के सजीत कुमार, ‘औद्योगिकी विभाग की योजनाएं एवं सेवा’ के बार में बात किया। श्री सजीत कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ यह सत्र समाप्त हुआ।

उद्‌घाटन सत्र प्रगति में

श्री के.एस. प्रदीप कुमार द्वारा कार्यशाला का उद्‌घाटन करना

परामर्श कार्यशाला

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची में मत्स्यन प्रणाली अभिकल्प को अंतिम रूप देने के लिए एक दिन की पणधारी परामर्श कार्याशाला 28 फरवरी, 2015 को संचालित की गई। यह कार्यशाला “उष्णकिटबंधी समुद्रों के लिए हरी मत्स्यन प्रणालियां” पर इस तदर्थ परियोजना के भाग के रूप में संचालित की गई थी। इस कार्याशाला में भिन्न क्षेत्रों के 20 पणधारी प्रतिनिधी भाग लिए इस कार्यशाला के दौरान मत्स्य उद्योग एवं मत्स्यन प्रौद्योगिकी द्वारा सामना किए जा रहे समस्यों पर चर्चा की गई।

प्रग्रहण एवं पश्च प्रग्रहण मात्स्यिकी प्रौद्योगिकियों पर कार्यशाला

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची द्वारा "प्रग्रहण एवं पश्च प्रग्रहण मात्स्यिकी प्रौद्योगिकियों का परिदृश्य" पर एक पूर्व सम्मेलन 23 फरवरी, 2015 के दौरान प्रथम विश्व महासागर विज्ञान कांग्रेस (ड्ब्ल्यू ओ एस सी) 5-8 फरवरी, 2015 के दौरान संपन्न के भाग के रूप में आयोजित किया गया। इस कार्यशाला का उद्‌घाटन डॉ. वी.एन. संजीवन, पूर्व निदेशक, सी एम एल आर ई, कोची और महा सचिव ड्ब्ल्यू ओ एस सी 2015 के द्वारा किया गया। डॉ. सी.एन. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं

डॉ. सी.एन. रविशंकर अध्यक्षीय भाषण प्रदान करना

डॉ. वी.एन. संजीवन उद्‌घाटन भाषण प्रदान करना

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता किए और इस कांग्रेस के आयोजन में भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं की भूमिका को बताए। डॉ. लीला एड्विन, कार्यकारी अध्यक्ष, मत्स्यन प्रौद्योगिकी प्रभाग और इस कार्यशाला की संयोजिका उपस्थित का स्वागत की और डॉ. टी.वी. शंकर, अध्यक्ष, गुणता आश्वासन एवं प्रबंध प्रभाग, धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दो दिन की कार्यशाला में सिफ्नेट, सी एम एल आर ई, कुसट, कुफोस और भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं से बीस अनुसंधान विद्यार्थी भाग लिए।

प्राथमिकता निर्धारण के लिए पणधारी बैठक

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं का विशाखपट्टणम अनुसंधान केन्द्र अनुसंधान परियोजनाओं की प्राथमिकता निर्धारण के लिए एक पणधारी बैठक 17 मार्च, 2015 को संचालित की। इस बैठक में यंत्रीकृत मात्स्यिकी, लघु मात्स्यिकी, मत्स्य संसाधन उद्योग, राज्य मात्स्यिकी विभाग, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकारण (एमपीइडीए), नेटफिश-एमपीडा, भा कृ अनु प-केन्द्रीय समूद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (केसमाअनुसं) और एक गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) के प्रतिनिधि शामिल थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस तिमाही के दौरान निम्नलिखित भीतरी प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए गए:

कोची

1. खाद्य का जैवरसायन विश्लेषण में आधुनिक तकनीक (12-22 जनवरी)
2. समुद्रीशैवल सार की प्रतिसूक्ष्मजीवीय प्रतिक्रिया के निर्धारण के लिए प्रयोगशाला तकनीक (12-23 जनवारी)
3. सौर शुष्कक की प्रयुक्ति से मत्स्य के शुष्कन पहल (9-12 फरवरी)
4. मत्स्यन जहाज के बोर्ड पर प्रयुक्त इलेक्ट्रनीक एवं सूचना उपकरणों की प्रयुक्ति (9 फरवरी 7 मार्च)
5. नए पहचान किए ग्रमाप्रोटीओ-जीवाणु से जैव सरफेक्टेन्ट का उत्पादन एवं लक्षण चित्रण पर अध्ययन (17 नवंबर, 2014-16 फरवरी 2015)
6. मेथीसीलीन-प्रतिरोध स्टेफीलोकोकास औरास के विरूद्ध प्रतिसूक्ष्मजीवीय प्रतिक्रिया के लिए एक्टीनोमाइसीटीस की छानबीन (17 नवंबर, 2014-16 फरवरी 2015)

एच ए सी सी पी धारणा (कोची)

समुद्री खाद्य गुणता आश्वासन (कोची)

7. जल का सूक्ष्मजीवीय विश्लेषण (24-28 जनवरी)
8. काइटीन एवं काइटोसैन प्रौद्योगिकी (25-26 फरवरी)
9. मत्स्य मूल्यवर्धन एवं स्वास्थ्य हस्तन (12-13 मार्च एवं 20-21 मार्च)
10. समुद्रीखाद्य गुणता आश्वासन (16-26 मार्च)
11. एच ए सी सी पी धारणाएं (23-27 मार्च)
12. जलीय तालाब या खेती से टी डी एच सकारात्मक विब्रियो पाराहेमोलीटीक्स (25 मार्च 23 मई)
13. पेनीबेसीलस इल्जी से काइटीनेस का प्रति कवकिया प्रभाव (25 मार्च 23 मई)
14. मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पाद (30-31 मार्च)

विशाखपट्टणम

1. समुद्रीखाद्य के सूक्ष्मजीवीय परीक्षण के लिए प्रयोगशाला पद्धतियां (27 जनवरी 26 फरवरी)
2. सूक्ष्मजीवीय पद्धतियां (27 जनवरी 26 फरवरी)

वेरावल

1. समुद्रीखाद्य की सूक्ष्मजीवीय गुणता (19-24 जनवरी)
2. सौर शुष्कक की प्रयुक्ति से सुधरित गुणता मत्स्य की तैयारी (9-12 फरवरी)
3. मत्स्य गुणता विश्लेषण के लिए जैवरसायन तकनीक (13-19 फरवरी)
4. संपदा संरक्षण के लिए उत्तरदायी मत्स्यन तकनीक (24-26 मार्च)

मत्स्य गुणता विश्लेषण का जैव रसायन तकनीक (वेरावल) - सहभागी एवं संकाय

आउटरिच कार्यक्रम

इस तिमाही के दौरान निम्नलिखित आउटरिच कार्यक्रम संचालित किए गए:

1. डायमन्ड मेश से वर्ग मेश कोडएन्ड में परिवर्तन और लम्बी अर्ध वेलापवर्ती ट्रॉल प्रणाली का प्रायोगिक मत्स्यन निदर्शन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, वेंगेरा, महाराष्ट्र में 11 जनवरी, 2015।
2. डायमन्ड मेश से वर्ग मेश कोडएन्ड में परिवर्तन और लम्बी अर्ध वेलापवर्ती ट्रॉल प्रणाली का प्रायोगिक मत्स्यन निदर्शन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, मलवन, महाराष्ट्र में 13 जनवरी, 2015।
3. खाद सुरक्षा के लिए पांच मुख्य विषयों पर अभिज्ञा कार्यक्रम, कसारगोड में 16 जनवरी, 2015।

4. खाद्यजान्य बीमारी, रोकने के उपाय और उपचार पर अभिज्ञा कार्यक्रम, कसारगोड में 17 जनवरी, 2015।
5. कछुवा अपवर्जन युक्ति पर अभिज्ञा कार्यक्रम चैनई मत्स्यन बंदरगाह, 20-22 जनवरी, 2015।
6. मत्स्य/कवचमत्स्य बीमारियों पर अभिज्ञा कार्यक्रम, त्रिशूर में, 10 मार्च, 2015।
7. मत्स्य/कवचमत्स्य बीमारियों पर अभिज्ञा कार्यक्रम, पालक्कड में, 11 मार्च, 2015।
8. प्रग्रहण एवं पश्च प्रग्रहण प्रौद्योगिकियों पर प्रशिक्षण सह निदर्शन कार्यक्रम, विजयनगरम में, 11 मार्च, 2015।
9. झींगा/कवचमत्स्य बीमारियों पर अभिज्ञा कार्यक्रम, पतननाक्कड, आलपुष़ा में, 24 मार्च, 2015।
10. मत्स्य/कवचमत्स्य बीमारियों पर अभिज्ञा कार्यक्रम कोट्टयम में, 27 मार्च, 2015।
11. पर्यावरणानुकूल मत्स्यन गिअर एवं अल्प लागत मत्स्य से मल्यवर्धित उत्पाद के रोजगार पर प्रशिक्षण सह निदर्शन कार्यक्रम सिल्टीगुड़ा, रायग़ढ जिला, ओडिश में, 30 मार्च, से 1 अप्रैल 2015।

प्रदर्शनियों में सहभागिता

इस तिमाही के दौरान, संस्थान निम्नलिखित प्रदर्शनियों में सहभागिता किया:

1. कछुव त्योहार के सिलसिले में श्रीकाकुलम में संपन्न प्रदर्शनी 6-7 जनवरी, 2015।
2. रा ग्रा वि सं, हैदराबाद में संपन्न ग्रामीन प्रौद्योगिकी मेला 6-7 जनवरी, 2015।
3. मैरीटाइम एक्सपो एंकारेज के सिलसिले में नाव प्रौद्योगिकी विभाग, कुसट, कोची में संपन्न प्रदर्शनी 10-11 जनवरी, 2015।
4. केरल विज्ञान कांग्रेस आलपुष़ा में, 22-30 जनवरी, 2015।
5. वी.एस. कृष्णा महाविद्यालय, विशखपट्टणम में संपन्न प्रदर्शनी 3 फरवरी, 2015।
6. प्रौद्योगिकी सप्ताह समारोह के सिलसिले में संपन्न प्रदर्शनी, अम्दलवाल्स, आं प्र 5 फरवरी, 2015।
7. विश्व महासागर विज्ञान कांग्रेस के सिलसिले में संपन्न प्रदर्शनी,

ग्रामीन प्रौद्योगिकी मेला, हैदराबाद

आकाशवाणी प्रदर्शनी, कोची

एक्वा एक्वरियम - 2015, विजयवाडा

विश्व महासागर विज्ञान काँग्रेस, कोची

कोची 5-8 फरवरी, 2015।

8. जिला औद्योगिक विभाग द्वारा आयोजित मशीन प्रदर्शनी, कोची 17-20 फरवरी, 2015।

9. आंध्रा लोयोला महाविद्यालय में संपन्न एक्वा एक्वारीय 2015, विजयवड़ा 20-22 फरवरी, 2015।

10. के एम सी टी अभियांत्रिकी महाविद्यालय में संपन्न कर्मा-2015 प्रदर्शनी, कोषीकोड़ 26 फरवरी - 1 मार्च, 2015।

11. न्यूट्रा इंडिया सम्मेलन 2015 के सिलसिले में संपन्न प्रदर्शनी, मुम्बई 18-19 मार्च, 2015।

12. आकाशवाणी एफ एम स्टेशन के स्वर्ण जयंती के सिलसिले में संपन्न प्रदर्शनी, कोची 31 मार्च, 2015।

उत्तरदायी मत्स्यन तकनीक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (रा मा वि बो) के सहायोग से संपदा संरक्षण के लिए उत्तरदायी मत्स्यन तकनीक पर एक तीन दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम वेरावल के मछुवारों के फायदे के लिए भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं का वेरावल अनुसंधान केन्द्र में 24-26 मार्च के दौरान संचालित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री रामजी भाई वनीक, उपाध्यक्ष, वेरावल यान मालिक एसोशिएशन द्वारा किया गया। डॉ. लीला एड्विन, कार्यकारी अध्यक्ष, मत्स्यन प्रौद्योगिकी प्रभाग, समारोह की अध्यक्षता की। श्री सुमित रावत, सहायक कमान अधिकारी, भारतीय तट रक्षक, श्री वी.के. हकीम, सहायक निदेशक, एम्पीडा और श्री मोहम्मद कोया, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के स मा अनु सं वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र आर्शीवचन प्रदान किए। डॉ. जी.के. शिवरामन, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं वेरावल अनुसंधान केन्द्र उपस्थित का स्वागत किया जबकि डॉ. के.के. प्रजित, वैज्ञानिक और इस कार्यक्रम का संयोजक धन्यवाद ज्ञापित किया। बाद में, तकनीकी सत्रों के दौरान, सुरक्षित मत्स्यन पर श्री सुमित रावत कक्षा का संचालन किया और एक भाषण उत्तरदायी मत्स्यन तकनीक पर डॉ. पी. प्रवीन, प्रधान वैज्ञानिक प्रदान किया। डॉ. वी.आर. मधु, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. के.के. प्रजित, वैज्ञानिक अन्य संकाय सदस्य थे। तकनीकी सत्रों के बाद प्रायोगिक सत्र थे। इस कार्यक्रम में श्री खरवा संयुक्त मच्छीमर यान मालिक एसोशिएशन (सागरपुत्र फोन्डेशन), वेरावल, श्री भीडिया खरवा समाज यान मालिक एसोशिएशन, श्री भीडिया कोली समाज और संयुक्त मच्छीमर यान मालिक एसोशिएशन से करीब 80 मछुवारे भाग लिए।

श्री रामजी भाई वनिक द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन

सुरक्षित मत्स्यन पर श्री सुमित रावत का कक्षा संचालन

कार्यक्रम के सहभागी एवं संकाय

जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम

के मा प्रौ सं सौर शुष्कक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के वेरावल अनुसंधान केन्द्र में 9-12 फरवारी, 2015 के दौरान जनजातीय उपयोजना (ज उ यो) के अधीन सौर शुष्कक प्रयुक्ति से सुधरित गुणता शुष्कित मत्स्य पर एक प्रशिक्षण सह निदर्शन कार्यक्रम संचालित किया गया। इस प्रशिक्षण के लाभ भोगी थे भारत अदिम जूथ मत्स्यउद्योग सलाहकर मंडल वेरावल, गुजरात के नजदीकी तलला क्षेत्र के सिद्धी जनजातीय कल्याण के लिए निर्मित एक सोसायटी के जनजातीय मछुवारे। सिद्धी गुजरात की एक सुप्रसिद्ध जनजाती है। वे भिन्न नामों जैसे भारतीय अफ्रिकी, हब्शी, बादश आदि से जाने जाते है। उन्हे अफ्रिकी मूल का माना जाता है। लेकिन उनका भारत में वास्तविक आगमन के संबंध में विवाद है। लेकिन अब सिद्धी भारतीय समाज के अभिन्न अंग है और अदिम जनजाती के अधीन आते है। वे सामान्यतः मज़दूरी, कृषि खेती मज़दूर और मत्स्य बिक्री एवं मत्स्य संसाधन कार्य जैसे मास्यिकी कार्यकलापों से संबंधित है।

इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. जी.के. शिवरामन, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं वेरावल अनुसंधान केन्द्र द्वारा की गई। डॉ. ए.के. झा, वैज्ञानिक, उपस्थित का स्वागत किया। श्री जयपालन, उपनिदेशक, ई आइ ए, श्री वी.के. हकीम, सहायक निदेशक, एम्पीडा और श्री मोहम्मद कोया, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के स मा अनु सं वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र आर्शीवचन प्रदान किए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं वेरावल अनुसंधान केन्द्र के संकाय, श्रीमती वी. रेणुका, डॉ. ए.के. झा, श्रीमती एस. रम्या, श्री वी. चद्रशेखर और डॉ. के.के. प्रजित शुष्क मत्स्य, स्वास्थ्यकर और वैज्ञानिक पद्धतियों के द्वारा मत्स्य का लवण अभिसाधन, आर्थिकी अच्छे निर्माण व्यवहारों के साथ साथ सौर शुष्कक की परिचालनीय पद्धतियों आदि में सहभागियों को प्रत्यक्ष प्रशिक्षण दिए।

प्रशिक्षण प्रगति में

सहभागी एवं संकाय

समापन समारोह में, डॉ. जी.के. शिवरामन उपस्थित का स्वागत किया। श्री जयपालन, उपनिदेशक, ई आइ ए, मुख्य अतिथि थे। श्री जयबाल, उपनिदेशक, एम्पीडा और श्री मोहम्मद कोया, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के स मा अनु सं वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र भी इस सुअवसार पर उपस्थिति थे। श्रीमती रेणुका धन्यवाद ज्ञापित की। सौर शुष्कक मत्स्य शुष्कन की एक सुधरित एवं स्वास्थ्यकर पद्धति पर स्थनीया भाषा में तैयार एक बोशर सहभागियों में वितरित किया गया। प्रशिक्षणर्तियों से एक अन्योन्यक्रिया सत्र आयोजित किया गया और इस कार्यक्रम की समाप्ति पर पुर्ननिवशन भी प्राप्त किया गया।

कौशल विकास कार्यक्रम

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के वेरावल अनुसंधान केन्द्र में 25 फरवारी, 2015 को एक कार्यक्रम सौर शुष्कक को सिद्धी जनजाती को सौंपने के लिए भारत अदिम जूथ मत्स्यउद्योग सलाहकर मंडल वेरावल के साहयोग से आने वाले समय में अपने खूद एवं स्वः निर्भरता द्वारा लघु उद्यम प्रारंभ करने उन्हें सशक्त बनाने आयोजित किया गया। सौर शुष्कक सौंपने से पहले, इस समुदाय को मत्स्य शुष्कन पद्धति एवं शुष्कक परिचालन पर प्रशिक्षण दिया गया।

डॉ. सी.एन. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं इस सौर शुष्कक को श्री हसम भाई जुम्माभाई, अध्यक्ष, भारत अदिम जूथ मत्स्यउद्योग सलाहकर मंडल वेरावल को श्री लखम भाई भौंसला, अध्यक्ष, समुद्री खाद्य निर्यातक एसोशिएशन, गुजरात, श्री जगदीश फोफन्दी, उपाध्यक्ष, समुद्री खाद्य निर्यातक एसोशिएशन, और अध्यक्ष, ट्रॉल मालिक एसोशिएशन, वेरावल जैसे वेरावल के उत्कृष्ठ मत्स्य संसाधकों के साथ कई अन्य वेरावल के मत्स्य संसाधकों की उपस्थिति में सौंपे।

सौर शुष्कक को सौंपना

प्रशिक्षण सह निदर्शन कार्यक्रम

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के विशाखपट्टणम अनुसंधान केन्द्र पर्यावरणानुकूल मत्स्यन गिअर एवं अल्प लागत मत्स्य से मूल्यवर्धित उत्पादन के रोजगार पर ज उ यो के अधीन एक प्रशिक्षण सह निदर्शन कार्यक्रम सिल्टीगुड़ा, रायग़ढ जिला, ओडिश में 30 मार्च से 1 अप्रैल 2015 तक संचालित किया। इस कार्यक्रम का प्रारंभ डॉ. एम.एम. प्रसाद, केन्द्र के प्रभारी वैज्ञानिक के द्वारा परम्परागत दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया। सहभागियों को संबोधित करते हुए डॉ. एम.एम. प्रसाद खाद्य के रूप में मत्स्य का महत्व, नियमित अंतराल में मत्स्य उपभेग के स्वस्थ लाभ, मत्स्य हस्तन में सफ़ाई और अल्प मूल्य मत्स्य से मूल्यवर्धित उत्पादों की तैयारी में प्रायोगिक ज्ञान रखने के महत्व के बारे में जानकारी दिए। डॉ. आर. रघुप्रकाश, प्रधान वैज्ञानिक भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के विशाखपट्टणम अनुसंधान केन्द्र में उपयुक्त मेश आकार के साथ अभिकल्पित एवं संरचित पर्यावरणानुकूल मत्स्यन गिअर, मुड़ने वाले मत्स्य फंदे और जालों के बारे ताकि छोटे एवं किशोर मत्स्यों को कम करने पर बात किया। श्री द्विवेदी, ए एफ डी, रायग़ढ सहभागियों को स्थानीया भाषा में संबोधित किए। श्री बी.के. पाण्डा, स मु त अ, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

इस तीन दिनों के कार्यक्रम के दौरान सहभागियों को प्रग्रहण से पश्च प्रग्रहण तक भिन्न अवस्थाओं में मत्स्य हस्तन पर, उत्पाद विकास, उपभोक्ता/प्लेट तक पहुँचने तक का संग्रहण, भिन्न मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पादों की तैयारी और पर्यावरणानुकूल स्वभव के मत्स्यन गिअरों की प्रयुक्ति और उनके द्वारा नियोजित परम्परागत पर कम मार्ग कर और फायदों पर भाषण दिया गया। निर्दशित मूल्यवर्धित उत्पाद थे मत्स्य अचार, कटलेट और पकोड़ा। सहभागियों में 95 प्रतिशत महिलाएं थे।

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के विशाखपट्टणम अनुसंधान केन्द्र से मुड़ले वाले मत्स्य फांदें, क्लोम जाल, उष्मा रोधी मत्स्य थैलियां जैसे औजारों को मुफ्त में सहाभागियों को दिया गया। अवतरण केन्द्र से मत्स्य परिवहन के लिए बर्फ़ डिब्बें, स्वाथ्यकर स्थिति में उत्पादों के उचित संवेष्टन सहायता के लिए ताप सीलक, और नियमित रूप से मत्स्य उपभोग के महत्व को दिखाने वाला पोस्टर जिसे कि पोषण्विक आवश्यकता प्रदान किया जा सके और जन जातीय मछुवारों के बीच जानकारी में विद्ध भी की जा सके।

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के प्रयासों से प्रभावित होकर दोनों गै स सं और सर्वश्री जे के पेपर मिल्स कार्मिक जन जातीय मछुवारों को आगे अपने कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदयित्व निभाने के भाग के रूप में विशेषकर महिलाओं की सहायता करने की प्रतिज्ञा किए।

इस कार्यक्रम के अंत में, एक अन्योन्यक्रिया सत्र संचालित किया गया जिस में निम्न लिखित प्रौद्योगिकी आवश्यकताओं को पणधारियों द्वारा पहचान किए गए:

1. मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पादों की तैयारी के लिए प्रौद्योगिकी औजार
2. एफ आर पी छोटे यान
3. अधिक प्रशिक्षण सह निदर्शन कार्यक्रम।

लाभभोगियों को औज़ार वितरित करना

मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पादों का निदर्शन

पनर्निवेश कार्यक्रम प्रगति में

'खाद्य सुरक्षा के लिए पांच मुख्य विषय' पर कार्यशाला

'तटीय केरल में मत्स्यन आधारित सूक्ष्म उद्यम यूनिटों, जैसे मत्स्यगंधी, महात्माजी और सहहृदय वालीय परंबा पंचायत कार्यालय कासरगोढ़ में महिलाओं के लिए खाद्य सुरक्षा की मध्यस्थता' पर परियोजना के आधीन 'खाद्य सुरक्षा के लिए पांच मुख्य विषय' पर एक एक दिन की कार्याशाला 16 जनवरी, 2015 को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित की गई। तकनीकी सत्र डॉ. वनजा, कासरगोड जिला मत्स्यफेड प्रबंधक, श्री के. शरीफ परियोजना अधिकारी, मत्स्यफेड और डॉ. फमीना हसन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची द्वारा संचालित किए गए।

लोकार्पण समारोह के बाद उच्च पदस्थ

फिश मैड विमोचित किया गया

पहला मत्स्य मैड आउटलेट, केरल राज्य तटीय क्षेत्र विकास कार्पोरेशन (के एस सी डी सी) की एक पहल, इस संस्थान में एन ए आई पी आर एच एस एस पी परियोजना के अधीन परिचालन, जीन विकसित मूल्यवर्धित एवं खाने के लिए तैयार मत्स्य आधारित उत्पाद की बिक्री 23 फरवरी, 2015 को श्री के बाबू, मंत्री, मात्स्यिकी, अबकारी, एवं बंदरगाह, केरल सरकार द्वारा उद्घाटित किया गया। इस आउटलेट को एम.जी. रोड, एरणाकुलम के सेंट्रॉल स्कवट मॉल में खोला गया। मंत्री महोदय प्रथम बिक्री अभिनेत्री सर्वश्री स्वेता मेनोन को इस उत्पाद को श्री डोमीनीक प्रजेन्टेशन, श्री ल्यूदी ल्यूइस और हीबी इड़ेन, विधायक, महापौर श्री तोमी चम्मीनी; जिलादिश श्री एम. राजमाणिक्यम, भा प्र से, के एस सी डी सी, म प्र डॉ. के. अम्बडी और विदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं डॉ. सी.एन. रविशंकर की उपस्थित में सौंप कर किए। फिश मैड एवं उच्च गुणता शुष्क मत्स्य ब्रण्ड के अधीन "ड्रिश" जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों पर एन ए आइ पी-आर एच एस एस पी द्वारा व्यापार नमूनों को प्रवेश करने के लिए प्रौद्योगिकियाँ सहयोग को मंत्री महोदय द्वारा सराह गया।

खाद्य जन्य बीमारी पर अभिज्ञा कार्यक्रम

पणधारियों के लिए खाद्य जन्य बीमारी, रोकथम उपाय एवं उपचार पर एक अभिज्ञ अभियन 17 जनवरी, 2015 को वलिय परंबा पंचायत कार्यालय, कसारगोड, में संचालित किया गया। श्रीमती टी.वी. सावित्री, विकास स्थायी समिति अध्यक्ष द्वारा इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के की ग्रामीन प्रौद्योगिकी मेल 2015 में सहभागिता

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं का विशाखपट्टणम केन्द्र रा ग्रा वि सं, हैदराबाद में संपन्न ग्रामीन प्रौद्योगिकी मेल 2015 में 8-12 जनवरी, 2015 के दौरान सहभागिता किया। इस दल के सदस्य थे डॉ. एम.एम. प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक और पी.पी. राधाकृष्णन तकनीकी अधिकारी, और श्री जी. भूषणम, तकनिशियन इस कार्यक्रम के दौरान, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं में विकसित प्रौद्योगिकियाँ मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पाद, मत्स्य रद्दी से तैयार भिन्न उत्पाद एवं पर्यावरणानुकूल मत्स्य गिअरों को प्रदर्शित किया गया। दर्शाकों में शामिल थे, विद्यार्थी, गृहणियाँ, मछुवारे, अकादमी वेद, गै स सं, स्व स सं, रा कृ अनु प-अ के कृ अनु वं प्रशिक्षक वैज्ञानिक, रा कृ अनु प्र अ के संकाय, राजेन्द्र नगर में स्थित भा कृ अनु प के अन्य संस्थानों के वैज्ञानिक, उद्यमवृत्ती की अभिरुची रखने वाले व्यक्ति। पांच दिनों की समाप्ति पर डॉ. एम.बी. राव म नि, रा ग्रा वि सं और मु क अ, रा मा वि बो प्रत्येक स्टॉल का दौरा किए और अन्योन्यक्रिया पुर्निवेशन था जो संपूर्ण प्रदर्शन स्थाल में प्रसारित हो रहा था। डॉ. एम.वी. राव, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं जैसे प्रमुख मात्स्यिकी संस्थानों से कहा जो कि ग्रामीण मछुवारे विशेषकर के आर्थिक रूप से अधिक कमज़ोर और महिलाओं को लाभदायी होगा।

डॉ. एम.वी. राव, मनि, रा ग्रा वि सं और मु क अ, रा मा वि बो भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के स्टॉल में

महिला दिवस समारोह

यह संस्थान 9 मार्च, 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। डॉ. निर्मला पाद्मनभण, अर्थशास्त्र विभाग की अध्यक्षा, सेंट टेरीसा कॉलेज, एरणाकुलम इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थी।

डॉ. निर्मला पाद्मनभण मुख्य अतिथि का संबोदन करना

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं को उत्तम प्रदर्शक पुरस्कार

एम एम एक्टीव और सी टेक कम्यूनीकेशन्स के साथ संयुक्त रूप से न्यूट्रॉसीटीकल्स, पोषक और सहजक की अंतर्राष्ट्रीय सोसाइटी (आई एस एन एन ए एन) 18-19 मार्च, 2015 के दौरान मुम्बई में 'न्यूट्रॉ इंडिया समीट 2015' एक कार्यक्रम आयोजित किया।

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं के मुम्बई अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक इस सम्मेलन में सक्रिया रूप में सहभागीता किए और संस्थान के व्यवसाय नियोजन एवं विकास यूनिट की सहायता से इस प्रदर्शन स्टॉल में संस्थान द्वारा विकसित उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया गया। उत्पादों में शामिल थे काइटीन, काइटोसैन, ग्लूकोसमीन हाइड्रॉक्लोरइड, काइटोसैन स्पोन्ज, कल्सियम कैप्सूल्स, हाइड्रॉक्सीएपाटीट कोलाजेन पेप्टेड, सुसीनील काइटोसैन हाथ साफक, रिटोर्ट पाउचों में खाने के लिए तैयार मत्स्य कढ़ी निष्कर्षित स्नैक्स, मत्स्य चारा आदि। और आगे, प्रौद्योगिकी संबंधित विस्तृत रचना पोस्टर के रूप में प्रदर्शित की गई। यह प्रदर्शन औपचारिक रूप में डॉ. आर.ए. मशेलकर, एफ आर एस, अध्यक्ष, वैश्विक अनुसंधान एलेन्स द्वारा किया गया। भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं स्टॉल का राष्ट्रीय संगठनों के उच्च पदाधिकारी, कई निजी उद्यमी, औषध पेशेवर, वैज्ञानिक,

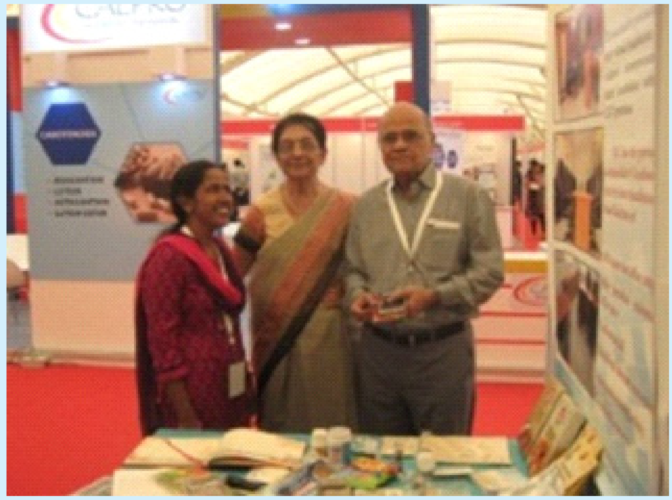

विशिष्ट व्यक्तियों का भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं स्टॉल का निरीक्षण

विद्यार्थी और राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संस्थानों के अकादमीवेद दौरा किए।

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं को पदार्थ एवं सूचना की श्रेणी में अंतर्राष्ट्रीय परामर्श परिषद 'उत्तम प्रदर्शक' का पुरस्कार प्रदान किया। यह पुरस्कार आई एस एन एन एन द्वारा संस्थान/उद्योग अपनी क्षमता विशिष्ठता की उपलब्धि की मान्यता में स्थापित की गयी। यह पुरस्कार भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं को डॉ. पिंगफन राव, शासकीय परिषद सदस्य, अंतर्राष्ट्रीय खाद्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एंघ और निदेशक, जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, फूजूओं विश्वविद्यालय, चीन द्वारा डॉ. वी. प्रकाश, विख्यात भा वे अनु प और अध्यक्ष, 10 वां न्यूट्रॉ इंडिया सम्मीट 2015 की उपस्थिति में प्रदान किए।

मत्स्य बीमारियाँ एवं खेती प्रबंध मामलों पर अभिज्ञा कार्यशाला

राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा निधिक जलीय प्राणीबीमारि पर राष्ट्रीय निगरानी कार्यक्रम पर परियोजना के अधीन केरल के चार जिलों में चार अभिज्ञा कार्यक्रम संचालित किए गए। त्रिशूर जिलों में, इस कार्यक्रम में 52 किसान एवं 12 पंचायत संयोजक भाग लिए। त्रिशूर में स्थित खेती में प्रकट होने वाले भिन्न मत्स्य बीमारियों और खेती प्रबंध मामलों पर एक अन्योन्यक्रिया सत्र किसानों के साथ संचालित किया गया जिस में किसान अपने अनुभवों को सूचित किए। पालक्काड जिले में, 39 सहभागी 20 किसान एवं 19 पंचायन संयोजक भाग लिए। जलकृषि में जलगुणता प्राचलों का महत्व एवं मत्स्य बीमारी प्रबंध को तकनीकी सत्रों में विस्तृत रूप में बताया गया। आलपुष़ा जिले में, इस कार्यक्रम मं 51 सहभागी जिस में 47 किसान एवं चार पंचायत संयोजक शामिल थे ने भाग लिए। फिनाफिश एवं झींगा बीमारियों और आलपुष़ा जिल्ले में स्थित खेती में प्रबंध मामलों पर परियोजना दल द्वारा किसानों से एक विस्तृत चर्चा की गई जिस में सिाने अपने अनुभवों को प्रकट किए और पूर्व संस्थान शेडों से मत्स्यन रद्दी को फेकने के कारण जल गुणता के संबधित मामले है। किसानों के लिए स्वस्थ कार्ड प्रारंभ किए गए। कोट्टयम जिलों में, नौ किसान इस कार्यक्रम में भाग लिए। तकनीकी सत्र में, जल गुण्ता प्राचल एवं मत्स्य/झींगा बीमारियों से उनके सहयोग को विस्तृत रूप में समझाया गया।

त्रिशूर में अभिज्ञा कार्यक्रम

सहभागियों से अन्योन्यक्रिया

12 वें कृषि विज्ञान काँग्रेस में भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं का प्रस्तुतीकरण

डॉ. एम.एम. प्रसाद 12 वे कृ वि काँ में करनल में प्रस्तुतिकरण करना

12 वें कृषि विज्ञान काँग्रेस के दौरान एक भाषण की प्रस्तुति के लिए के भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची केरल में एक मात्स्यिकी संस्थान को 3-6 फरवरी, 2015 के दौरान करनल में संपन्न में आमंत्रित किया गया था। ए ए सी की कार्रवाई में विस्तार किए सारांश के रूप में अल्प लागत संसाधन एवं लघु मत्स्य उत्पादकों के लिए संवेष्ठन प्रौद्योगिकियाँ पर डॉ. सी.एन. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची प्रकाशित किया गया। निदेशक की पूर्व-व्यस्तता के कारण डॉ. एम.एम. प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम अनुसंधान केन्द्र ने सत्र 7: यंत्रीकरण और छोटे किसानों के लिए पश्च प्रग्रहण प्रौद्योगिकियों पर यह आमंत्रित भाषण प्रदान किया गया। डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प एवं सचिव, डेर, भारत सरकार और 12 वें ए एस सी में भा कृ अनु प - के मा प्रौ सं सहभागिता को मेजबान उच्च पदाधिकारी प्रशंसा किए। डॉ. प्रसाद अंतिम सत्र 10 कृषि में महिलाओं का सशाक्तिकरण डॉ. बी. मीनाकुमारी, उ म नि (मा) भा कृ अनु प, नई दिल्ली इस सत्र की अध्यक्षता की।

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं का भा प्र से अधिकारी प्रशिक्षार्थियों का दौरा

2014 बैच के 18 भा प्र से अधिकारी प्रशिक्षार्थी अपने अध्ययन दौरे (भारत दर्शान) और सार्वजनिक उद्यम से संलग्न प्रशिक्षण के भाग के रूप में 4 जनवरी, 2015 को, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची का दौरा किए। प्रशिक्षिओं के साथ एक अन्योन्य क्रिया बैठक अनुसंधान प्रभाग के अध्यक्षों से संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता डॉ. सी.एन. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची द्वारा की गई और डॉ. टी.वी. शंकर अध्यक्ष, गुणता आश्वासन एवं प्रबंध प्रभाग संस्थान के कार्यकलाप एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए एक प्रस्तुतिकरण दिया। डॉ. निकिता गोपाल, प्रधान वैज्ञानिक इस दौरे की नोडल अधिकारी थी।

आगंतुकों से निदेशक का अन्योन्य क्रिया

म प्रौ प्रयोगशाला का भा प्र से अधिकारियों का दौरा

भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं में एफ ई टी कार्यक्रम में कृ अनु वै वैज्ञानिक परिवीक्षाधीन भाग लिया

101 वें फोकर्स से संबंधित छः कृ अनु वै वैंज्ञानिक परिवीक्षाधीन भा कृ अनु प-रा कृ अनु प्र अ, हैदराबाद से संबंधित को भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं कोची को अपने क्षेत्र अनुभव प्रशिक्षण के लिए 19 फरवरी, 2015 से 11 मार्च, 2015 तक अनुबद्ध किए गए। एरणाकुलम जिले में पेरुम्बलम द्वीप के क्षेत्र परीक्षण एवं पी आर ए औजार के अनुप्रयोग के लिए चुना गया।

इस द्वीप में पेरूबलाम ग्राम पंचायत, कृषि भवन, पशु हस्पातल, सहकारिता सोसाइटी, झींगा छिलक यूनिट, कयर सोसाइटी आदि का दौरा किए। वे मुख्य सूचक एवं प्रगतिशील किसानों से अन्योन्यक्रिया किए। मून मात्स्यिकी, अरूर नामक एक मत्स्य संसाधन करखाने का और भा कृ अनु प- केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का दौरा आयोजित किया

ग्रामीन संगोष्ठी प्रगति में

कृ अनु वै परिवीक्षार्थी का क्षेत्र परीक्षण

गया। यह दल संस्थान के मत्स्यन जहाज सागर शिक्त में बोर्ड पर भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। एफ ई टी संयोजिका डॉ. निकिता गोपाल, प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं और निगरानी संकाय डॉ. गणेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक भा कृ अनु प-रा कृ अनु प्र अ, हैदराबाद के मार्ग निर्देश एवं पयार्वेक्षण के अधीन कृषि भवन, पेरुम्बलम में 6 मार्च, 2015 को एक ग्राम संगोष्ठी संचालित की गई। इस सेगोष्ठी में करीब 40 किसान एवं मछुवारें भाग लिए। श्रीमती वी.पी. शेरली, ग्रामपंचायत अध्यक्ष एवं श्रीमती लता, कृषि अधिकारी भी इस में भाग लिए। इस प्रशिक्षण का समापन संस्थान में 7, मार्च, 2015 को आयोजित संगोष्ठी जिस की अध्यक्षता डॉ. सी.एन. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं द्वारा की गई से हुआ।

स्वच्छ भारत अभियान

वेरावल अनुसंधान केन्द्र नियमित रूप से अपने कार्यालय परिसर एवं साटे क्षेत्रों में सफाई कार्यकलाप कर रहा है। सफाई के महत्व की जानकारी के लिए, 24 जनवरी, 2015 को और गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2015 भी स्वच्छ भारत अभियान संचालित किया गया।

विशाखपट्टणम अनुसंधान केन्द्र में स्वच्छ भारत मिशन प्रति शनिवर को दो घंटे मनाया जाता है। इस समय के दौरान कार्यालय परिसर, प्रयोगशाला एवं मत्स्यन जहाज में सफ़ाई कार्यकलाप किए जाते हैं।

वेरावल में स्वच्छ भारत कार्यक्रम

विदेश में प्रतिनियुक्ति

डॉ. निकिता गोपाल, प्रधान वैज्ञानिक, वि सू सां प्रभाग, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची को जलकृषि : मात्स्यिकी में सामनता एवं सशाक्तिकरण और जलकृषि मूल्य श्रृंखला में लिंग पर एक संगोष्ठि में भाग लेने के लिए थाइलेंड को 24-25 फरवरी, 2015 के दौरान प्रतिनियुक्त किया गया। डॉ. निकिता गोपाल इस संगोष्ठि में जलकृषि एवं मात्स्यिकी में लिंग की चुनौतियाँ पर एक अग्रत प्रस्तुतिकरण भी की। क्षेत्रीय लिंग एवं जलकृषि कार्यशाला कम्बोडिया, लाओं पी डी आर, थाईलेंड और वियतनाम में कार्यान्वित इस परियोजना के खोजों पर विचार एवं चर्चा के लिए जलकृषि विशेषज्ञ और पणधारियों को एक साथ किया। इस परियोजना के खोज जलकृषि मूल्य श्रृंखला में महिलाओं द्वारा सामना किए जा रही भूमिका बाधा और अवसरों पर प्रकाश ड़ाला गया। इस दो दिनों की कार्यशाला में बयईस सहभागी इस परियोजना के अनुसंधान कर्ता एवं एशिया-प्रशांत में जलकृषि केन्द्र का नेटवर्क, युसड/मार्किट, अक्सफम, यूटन यूमेन, मोकोन्ग रिवार कमीशन एवं केनान इन्स्टीट्यूट, एशिया शमिल थे। डॉ. निकिता गोपाल 'लिंग नेट वकर्लस एशियन क्षेत्र में परिवर्तन सृजन' की समूह कार्यकलापों की अगवाई भी की।

डॉ. निकिता गोपाल (दाए से दूसरी बैठी) अन्य सहभागियों के साथ

हिमचल प्रदेश के जलाशय मत्स्यन प्रणाली में समीक्षा

हिमाचल प्रदेश चार प्रमुख मानव निर्मित जलाशयों रखता जैसे गोविन्द सागर, पोन्ग, चमेरा और रंजीत सागर 26000 हेक्टर के जल फैलाव के साधन के साथ है। यह जलाशय मत्स्य उत्पाद की भारी संभावना को रखते और 6000 से ज्यादा मछुवारे के परिवारों को जीविका उपलब्ध करते। हिमचन प्रदेश सरकार 1976 में मात्स्यिकी अधिनियम को लागू किया और 1979 में हिमचल प्रदेश मात्स्यिकी नियम बनाया। यह राज्य जलाशय में संपदा के संभव प्रग्रहण के लिए सख्त प्रबंध विनियमन अनुरक्षित करता।

मत्स्यन के लिए मत्स्यन गिअर आयाम के संबंध में हिमचल प्रदेश के जलाशय मात्स्यिकी की समीक्षन के लिए, मात्स्यिकी विभाग, हिमचल सरकार, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं को प्रस्ताव किया। तदनुसार, डॉ. साली एन. थॉमस, प्रधान वैज्ञानिक के साथ तकनीकी अधिकारी श्री पी.एस. नाबी, श्री अरविन्द कलंनगुटकर और श्री एच. पूगेरा से सम्मिलित एक दल अक्तूबर 2014 एवं फरवरी 2015 में दो बार दौरा किया। यह अध्ययन हिमाचल प्रदेश के गोविन्द सागर, पोन्गा और चमैरा जलाशय शामिल है।

एक मूल सर्वेक्षण भिन्न केन्द्रों में संचालित किया गया और मत्स्यन यान एवं गियर पर आँकड़ा एकत्रित किया गया। शिकार किए महत्वपूर्ण जातियों को आकृतिमापीय आँकड़ा के साथ उनकी गुणता एवं मूल्य को चयनित केन्द्रों में मत्स्य विक्री के अवलोकन द्वारा एकत्रित किया गया। यह दल भिन्न अवतरण केन्द्रों में मछुवा समूहों के साथ बैठक किया और मत्स्यन परिचालन, मौसम एवं अन्य संबंधित मामलों से संबंधित सूचना को एकत्रित किया।

इस जलाशय में, 1 अप्रैल से 31 मार्च तक मत्स्यन किया जाता है और मत्स्यन के अधिकार मछुवा सोसाइटियों के सदस्यों को दिया गया। इस जलाशय में 100 मि.मी. से कम मेश आकार के क्लोम जाल एवं 80 मी लम्बाई और 5 मी गहराई के जालों को ही परिचालन के लिए अनुमति दी गई है। मछुवारों प्रयुक्त मत्स्यन यानों को 'किंष्टी' के रूप में जाना जाता है जो लकड़ी तकतों द्वारा, निर्मित डोंगी है। अवतरित मत्स्य जातियों में कटला, रोहु, मीररकार्प, महसीर, म्रिगल और सिलवर कार्प प्रबल थे। चमैरा जलाशय में, यह प्रायोगिक जालों के साथ मत्स्यन परीक्षण संचालित किया गया। मछुवारों के फायदे के लिए क्लोमजाल का वैज्ञानिक रिगिंग संचालित किया गया।

यह दल मात्स्यिकी निदेशक-सह-वार्डन, हिमाचल प्रदेश और भिन्न जलाशय प्रभागों के उपनिदेशक एवं सहा निदेशक से चर्चा किया। इस विभाग द्वारा लिए गए प्रबंध उपायों पर पदाधिकारी चर्चा किए और चमैरा जलाशय में अल्प शिकार के संबंध में और जल के भीतर पेड टुकड़ों के कारण परिचालन में दिक्त पर अपनी चिंता वयक्त की। भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं सिफारिश परिवर्तन के संबंध में, अगर कुछ, मेश आकार में, सामग्री और हिमचल प्रदेश के जलाशय में परिचालित क्लोमजालो के आयाम विभाग के पदाधिकारियों के द्वारा माँगी गई थी।

चमेरा जलाशय में भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं दल मत्स्यन परीक्षण करना

गोविन्द सागर जलाशय में प्रयुक्त यान एवं गिअर पर आँकडा एकत्रण

पोंग जलाशय के मछुवारों के साथ अन्योन्यक्रिया

डॉ. गुरचरन सिंह, मात्स्यिकी निदेशक-सह-वार्डन और अन्य विभाग पदादिकारियों के विचार विमर्श करना

पुरस्कार एवं मान्यताओं

डॉ. संतोष अलेक्स को कविता पुरस्कार

डॉ. संतोष अलेक्स, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, राजभाषा अनुभाग, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची 13 मार्च, 2015 को एस आर एम विश्वविद्यालय, चैनई में संपन्न समारोह के दौरान सर्जन लोक कवि सम्मान प्राप्त किया। डॉ. एस. बालसुब्रमणीयम, निदेशक, विज्ञान एवं मानवीकी विभाग, एस आर एम विश्वविद्यालय श्री श्रयन्स, अध्यक्ष, सर्जनलोक संगठन की उपस्थिति में यह पुरस्कार प्रदान किए।

डॉ. संतोष अलेक्स पुरस्कार प्राप्त करना

श्री राजासरवनन को कैराम चम्पीयनशिप

श्री के.आर. राजासरवनन, कुशल सहायक कर्मचारी, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची तिरुवनंतपुरम में 21-23 फरवरी, 2015, के दौरान संपन्न 'एस. रामस्वामी स्मारक' केरल राज्य 30 वा कैराम चम्पीयनशिप में पुरुष दल के चाम्पीयनशिप का विजेता स्थान प्राप्त किया।

श्री राजासरवनन (मध्य) चम्पीयनशिप प्राप्त करना

हस्ताक्षरित परामर्श समझौते

इस रिपोर्ट अवाधि के दौरान भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं कोची में निम्नलिखित परामर्श समझौते हस्ताक्षिरत किए गए:

1. एक 15 मी लम्बे एफ आर पी प्रशिक्षण सह पेट्रोलिंग जहाज के विस्तृत विनिर्देशन, सामान्य व्यवस्था आरेखण एवं अकलन उपलब्ध कराने के लिए मास्यिकी विभाग, महाराष्ट्र सरकार, तारापोरवला एक्वरीयम मुम्बई के साथ।
2. जी एम पी प्रमाणीकरण के साथ नींदाकरा, कोल्लम जिले में कार्यरत काइटीन एवं काइटोसैन संयंत्र के आधुनिकरण के लिए तकनीक सहायता उपलब्ध कराने के लिए केवल राज्य मात्स्यिकी विकास सहकारिता महासंघ लिमिटेड (मत्स्यफेड), तिरूवनंतपुरम के साथ। परामर्श प्रभार रु. 30,000/- है।
3. स्वच्छ जल मत्स्य उत्पादों का संसाधन एवं विपणन की प्रोन्नती पर सी एफ सी-एफ ए ओ परियोजना कार्य के लिए समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण कोची के साथ। परामर्श प्रभार रु. 6,48,485/- है।

प्रकाशन

अनुसंधान प्रपत्र

1. आनन्दन, आर., चाटर्जी एन.एस., शिवकुमार, आर., सुशीला माथ्यू, आशा के.के. और गणेशन, बी. (2015) चूहा मयोकर्डीयम के झील्ली बंध एटीपीएसेस और खनिज स्थिति में आहारी काइटोसैन संपूण सुधार आईसोप्रोटेशीनोल-प्रेरित विपथन, बयो, ट्रेस एलेम, रिस
2. अनीश कुमार, के.वी., प्रवीन पी., मीनाकुमारी बी., खनोलकर, पी.एस. और बैजू एम.वी. (2015) लक्षद्वीप सागर, भारत में प्रयोगिक ट्यूना लम्बीडोरी मत्स्यन में शार्क उपपकड, जे.एप्पल, एचाथोलोजी, 10.111/ जैय 12682
3. आरती अशोक, मुर्ति. एल.एन., मधुसूदना राव, बी., जेस्मी देबवर्मा, प्रसाद, एम.एम. गीतालक्ष्मी वी., और निकिता गोपाल (2015) - आँध्रा प्रदेश में झींगा उत्पादन एवं समुद्री खाद्य संसाधन पर प्रशांत सफेद झींगा (लीटोपीनस वनामई) का प्रभाव, मत्स्य प्रौद्यो, 52 (1): 53-57
4. जयकुमारी, ए., वेंकटेश्वरलू, आर., चौसेय, एम.के. और आनन्दन, आर. (2014)-जल मिश्रण में मत्स्य तेल की ऑक्सीकरण स्थिरता। पर अनिवार्य तेल एवं अदरक (जिन्जीबेट ओफीसीनले) का जलीय सार का प्रभाव से. फूड प्रोसेस एवं टेकनोलोजी 6 : 412।
5. मधुसूदना राव बी. और ललिता के.वी. (2015) जलकृषि के लिए

बेक्टेरीओ फेजसः क्या लाभदायी या नूकसनदायी, जलकृषि, 437:146-154।

6. मोहन, सी.ओ., रम्या, एस., मूर्ति, एन.एन., रविशंकर, सी.एन. और अशोक कुमार के. (2015) पकाने के समय पर फिलिंग मिडीयम का प्रभाव एवं डिब्बाबंध एलोफिन-ट्यूना (थूनस अल्बकरीस) की गुणता, फुडकांट्रॊल, 50:320-327।

7. मुहम्मद अशराफ, पी., ललिता के.वी., चक्रवर्ती, एस.के. और जैसवाल, ए.के. (2014)-मुम्बई तट, भारत से शिकार किए क्लोपीडए के पांच जातियों का लम्बाई एवं वज़न का सहसंबंध, मत्स्य प्रौद्योगिकी 52(4) : 291 294।

8. मुहम्मद अशराफ, पी.एस. श्रीजीत, पी.टी., सायाना के.ए., डिजू दास, पी. एच, साली एन. थॉमस, रमेशन एम.पी. और लीला एडविन (2015)-गुजरात, भारत में सफीर और पॉलीमीड से तैयार ड्रिफ्ट क्लोम जालन, मत्स्य प्रौद्योगिकी 52(1):62-66।

9. मूर्ति एल.एन., मधुसूदना राव बीख आनन्दन आर., सुशीला माथ्यू, लक्ष्मणन, पी.टी. और प्रसाद एम.एम. (2015)-लीटोपीनस वनामई स्फुटसशाला में प्रयुक्त वाणिज्यिक पश्च-डिंभक का पोषण्विक संयोजन, गुणता एवं संकट फोप्राइलिंग, इंडियन जे. फिश, 62(1):85-94।

10. मूर्ति, एल.एन., मधुसूदना राव बी., आशा के.के. और प्रसाद, एम.एम. (2014)-यल्लोफिन ट्यूना हड्डी चूर्ण का निष्कर्षन और गुणता मूल्यांकन, मत्स्यन प्रौद्योगिकी 51:38-42।

11. मूर्ति, एल.एन., मधुसूदना राव, बी., आशा के.के. और प्रसाद एम.एम. (2015)-पाकू पीएरक्टस ब्रकीपोमस (कूवीर 1818) का पोषण्विक संयोजन, उत्पाद विकास, निधानी आयु मूल्यांकन एवं गुणता मूल्यांकन, इंडियन जे. फिश, 62 (1):101109।

12. ओबूलेश टी., आशा, के.के., आनन्दन. आर., सुशीला माथ्यू, गणेशन, बी. कृष्णा, जी. और लक्रा, ड्ब्लयू एस. (2015)-एन-3 बहु असंतृप्त वसा अम्ल पी यू एफ ए पर आहारी स्कवालीन संपुटन का प्रति ऑक्सीकरक संरक्षा : युवा एवं बूढ़े चूहों मं औषधीय ऑक्सीकरक का दबाव, मत्स्यन प्रौद्योगिकी, 52 (1):48-52।

13. सुष्मीता, वी., दिव्या के. विजयन, आनन्दन आर., रविशंकर सी.एन. और सुशीला माथ्यू (2015)-मलयन गहरे सागर बोरफिश एन्टीगोनीय मलयना का एमीनों अम्ल प्रोफाइलिंग-कुपोषण को कम करने का एक प्रयास, काटिंग एड्ज, 12-15।

14. थेरासीलीन लूइस, यूवाराज पी., मधवचन्द्रन वी. और आनन्दन आर. (2015)-एलोक्सन प्रेरित मधुमोही चूहों में *एलंटस मलबरीका* स्टाम बार्क के-भिन्न सारों का प्रति मधुमोही और प्रति हाईपरलीपीडमीक कार्यकलाप, इटजे. बायो एन्ड फर्मा रेस., 6:327-331।

15. विष्णुविनायगम, एस., बिन्सी, पी.के. विजी, पी. और त्रिवेणी अडीग (2014)-मत्स्य संसाधन में रोगजनक जीवाणुओं की निगरानी, फूडएन्ड बिवेरेजस न्यूस, 6(22): 35-38

राजभाषा कार्यान्वयन

इस तिमाही के दौरान दो कार्यशालाएं संचालित की गई 1 पहली कार्यशाला संस्थान के प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए 2 फरवरी, 2015 को संचालित की गई। डॉ. संतोष अलेक्स, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी संकाय सदस्य था। दूसरी कार्यशाला संस्थान के निजी सचिव एवं व्यक्तिके सहायकों के लिए 2 मार्च, 2015 को संचालित की गई। डॉ. पी. शंकर, तकनीकी अधिकारी संकाय सदस्य था।

इस तिमाही के दौरान दो तकनीकी भाषण भी हिन्दी में संचालित किए गए। 13 फरवरी, 2015 को श्री ओ.बी. सतीश कुमार, तकनीकी अधिकारी 'ए' एन पी ओ एल, कोची "ट्रस्डूसरस एंड सोनर" पर एक भाषण प्रदान किया। डॉ. पी. प्रवीन, प्रधान वैज्ञानिक, मत्स्यन प्रौद्योगिकी, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची "लक्षद्वीप में खंम्बा एवं डोरी मत्स्यन" पर एक भाषण प्रदान किया।

श्री ओ.बी. सतीश कुमार भाषण प्रदान करना

स्नातकोत्तर अध्ययन

श्रीमती पी. विजी, वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं का विशाखपट्टणम अनुसंधान केन्द्र को भा कृ अनु प-केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (के म शि सं), मुम्बइ (समतुल्य विश्वविद्यालय) की पी एच. डी उपाधि उनके 'शीतित एवं अवरुद्ध स्थिति में परिरक्षित भारतीय बाँगडा, (रेस्ट्रालीगर कानार्गुटा) (कूवीर, 1817) की गुणता पर पौधा सार का प्रभाव शिर्षक शोध प्रबंध को प्रदान की गई। वे डॉ. टी.के. श्रीनिवास गोपाल, पूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची के मार्गनिर्देशन की अधीन यह कार्य की।

श्री जिन्सॉन जॉर्ज, वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची को कोचिन

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोची के द्वारा उनके भारतीय सफ़ेद झींगा (फेनरोपीनस इंडिकस) के लिए उच्च दाब संसाधन प्राचलों का अनुकूलीकरण और शीतित संग्रहण के दौरान उसकी निधानी आयु का मूल्यांकन शिर्षक शोध प्रबंध के लिए पी.एचडी. प्रदान की गई। वे डॉ. जे. बिन्दु, वरिष्ठ वैज्ञानिक, मत्स्य संसाधन प्रभाग, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची के मार्ग निर्देशन के अधीन यह कार्य किया।

कार्मिक समाचार

संगोष्ठी/विचार-गोष्ठी/कार्यशाला आदि में सहभागिता

- **डॉ. सी.एन. रविशंकर**, निदेशक - नैतृत्व प्रबंध पर कार्यकारी प्रबंध विकास कार्यक्रम, भा कृ अनु प-रा कृ अनु प्र अ, हैदराबाद (19-23 जनवरी)।
- **डॉ. सी.एन. रविशंकर**, निदेशक - और **डॉ. एस.के. पाण्डा,** वरिष्ठ वैज्ञानिक कृषि अनुसंधान के लिए वैज्ञानिक समन्वयन पर इंडो फेंच कार्यशाला, भा कृ अनु प, नई दिल्ली (9-11 मार्च) डॉ. रविशंकर इस कार्यशाला में खाद्य संसाधन एवं संवेष्ठन पर एक प्रस्तुतिकरण भी प्रदान किया।
- **डॉ. सी.एन. रविशंकर,** निदेशक, **डॉ. के.वी. ललिता,** प्र अ, सू एवं जै प्रौ, **डॉ. टी.वी. शंकर,** प्र अ, गु आ प्र, **डॉ. सुशीला माथ्यू,** प्र अ, जै एवं पो, **डॉ. ए.ए. सैनुद्दीन,** क प्र अ, म सं, **डॉ. लीला एड्विन,** क प्र अ, म प्रौ, **डॉ. साली एन. थॉमस, डॉ. पी. प्रवीन, डॉ. एम.पी. रमेशन, डॉ. निकिता गोपाल,** प्रधान वैज्ञानिक, **डॉ. फमीना हसन, डॉ. आर. आनन्दन, डॉ. पी. मुहम्मद अशराफ, डॉ. आशालता, डॉ. जार्ज नैनान, डॉ. जे. बिन्दु, श्री एम.वी. बैजू, डॉ. एस.के. पाण्डा, डॉ. के.के. आशा, डॉ. वी.आर. मधु,** वरिष्ठ वैज्ञानिक, **डॉ. सी.ओ. मोहन, श्रीमती पी. जयंती, श्री पी. चन्द्रशेखर, डॉ. वी. मुरुगदास, डॉ. एन.एस. चाटर्जी, डॉ. पी.के. बिन्सी, श्री जी. कमाई, डॉ ए. जयाकुमारी, श्रीमती एस. रम्या, श्रीमती एस.जे. लली, श्रीमती यू. पार्वती, कुमारी एच. मंदाकिनी देवी, श्री जी.एम. सिद्धय्या, श्री एस. श्रीजीत, श्रीमती टी.के. अनुपमा, डॉ. पंकाज किशोर, श्री करन कुमार के. रामटेक,** वैज्ञानिक, **श्री पी.एस. मुहम्मद शरीफ, श्री रितीन जोसफ कुमारी के.ए. सयाना, श्री पी.एच. डिजू दास, श्रीमती वी.पी. सौदा, कुमारी दिव्या के विजयन, श्री के.वी. विष्णु, श्री के.के. अजीश कुमार, कुमारी नताशा नायक, श्रीमती वी. सुष्मीता, श्री पी.के. महटो, श्रीमती लीया जयलाल, श्रीमती पी. श्रुति,** अनुसंधान अध्येता और **श्री वी. विपीन कुमार,** तक. सहायक विश्व महासागर विज्ञान कॉंग्रेस, कोची (5-8 फरवरी)। इस कॉंग्रेस में वे निम्नलिखित अनुसंधान प्रपत्र भी प्रस्तुत किए:

1. यू. पार्वती, ए. जयकुमारी, ए.ए. सैनुद्दीन और जॉर्ज नैनान द्वारा स्क्विड साइलेज की तैयारी एवं गुणता मूल्यांकन
2. पी.एस. मुहम्मद शरीफ, साली एन. थामस और लीला एड्विन द्वारा ओडिश के यंत्रीकृत क्लोम जाल मत्स्यन प्रणालियाँ
3. पी.एस. मुहम्मद शरीफ, पी.एच. डिजू दास, रितीन जोसफ, के.ए. सयाना, साली एन. थामस, वी.आर. मधु, एम.पी. रमेशन, एम.वी. बैजू, पी. प्रवीन और लीला एड्विन द्वारा भारतीय तट के परिचालन में बड़े मेश यंत्रीकृत क्लोम जाल
4. रितीन जोसफ, के.ए. सयाना, पी.एच. डिजू दास, पी.एस. मुहम्मद शरीफ, वी.आर. मधु, एम.पी. रमेशन, एम.वी. बैजू, साली एन. थॅमस, पी. प्रवीन एवं लीला एड्विन द्वारा भारत के लम्बी डोरी मत्स्यन प्रणालियाँ
5. पी.एच. डिजू दास, पी.एस. मुहम्मद शरीफ, रितीन जोसफ, के.ए. सयाना, साली एन. थॉमस, वी.आर. मधु, एम.पी. रमेशन, एम.वी. बैजू, पी. प्रवीन और लीला एड्विन द्वारा भारत के कोष संपश प्रणालियाँ
6. पी. मिनू, वी.पी. सौदा, एस.एस. शजू, आर.के. मिश्रा, एन. अनिलकुमार, पी. मोहम्मद अशराफ एवं लीला एड्विन द्वारा दक्षिण महासागर के भारतीय क्षेत्र में जैव प्रकाशिया अध्ययन
7. पी. मुहम्मद अशरफ द्वारा दूर दक्षिण पूर्वी अरब सागर के तटीय जल की प्रकाशिय गुणता
8. जी. कमाई एवं लीला एड्विन द्वारा भारत के तटीय राज्यों में समुद्री मत्स्यन विनियमन अधिनियमक का अनुपालन
9. के.के. आशा, एन.एस. चाटर्जी, के.के. अजीश कुमार आर. आनन्दन और सुशीला माथ्यू द्वारा सूक्ष्म संपुटन और पीयूर B-कैरोटीन के देने के बाद चूहों के जिगर एवं सीरम में B-कैरोटीन मात्रा का तुलनात्मक विश्लेषण
10. पी. जयंती, वी. चन्द्रशेखर और निकिता गोपाल द्वारा भारतीय ट्यूना का निर्यात क्षमता एक समय श्रृंखला विश्लेषण
11. एम.वी. बैजू, वी. विपीन कुमार और लीला एड्विन द्वारा 19.8 L_{OA} ऊर्जा कार्यक्षम संयोजन मत्स्यन जहाज के अभिकल्प का हाइड्रोडयनमीक विश्लेषण
12. जी.के. शिवरामन द्वारा गुजरात के शुष्कित मत्स्य नमूनों से कव को की पहचान एवं अण्विक टाइपिंग
13. जी.के. शिवरामन, ए.के. झा, एस. संजीव, टॉम्स सी. जोसफ, के.वी. ललिता, एस. रम्या और वी. रेणुका द्वारा समुद्री खाद्य से मालटीफ्लेक्स पी सी आर द्वारा ईस्कीरीकीय कोली का पथोटाइपिंग की वियुक्ति
14. पी.एच. डिजू दास और लीला एड्विन द्वारा भारतीय तट में रिंग सीन मत्स्यन प्रणालियों का मूल्यांकण एवं वृद्धि और उसका फैलाव
15. वी.आर. मधु और बी. मीनाकुमारी द्वारा वेरावल तट, गुजरात में *ट्रिचीरस लेप्टोरस* लीनस, 1758 के लिए डायमण्ड एवं वर्ग मेश कोडएन्डों का चयन

16. वी.आर. मधु, एम.पी. रमेशन, पी. प्रवीन एवं एम.आर. भूपेन्द्रनाथ द्वारा काट एवे टॉप बेल्ली ट्रॉल-एक नया पर्यावरणानुकूल झींगा ट्रॉल अभिकल्प
17. वी.आर. मधु, के.के. प्रजित और बी. मीनाकुमारी द्वारा गुजरात तट में पी एफ जेड परामर्शों का मान्यकरण (प्लवक उत्पादन एवं एसीटीस जाति की प्रबलता के बीच पारिस्थितिकी विज्ञान सहसंबंध पर अध्ययन के प्राथमिक परिणाम
18. एच. मंदाकिनी देवी, ए.ए. सैनुद्दीन, जॉर्जा नैनान एवं एस.के. पाण्डा द्वारा समुद्री शैवाल-संयोजित मत्स्य जर्की का गुणता मूल्यांकन
19. ए. जयकुमारी, क्रिस्टीन जोसफ, ए.ए. सैनुद्दीन, जॉर्ज नैनान, सी.एन. रविशंकर एवं आर. आनन्दन द्वारा कैराग्रीनन द्वारा संपुटित मत्स्य सूप चूर्ण का गुणता मूल्यांकन
20. ए. जयकुमारी, जॉर्ज नैनान, यू. पार्वती ए.ए. सैनुद्दीन, के.वी. ललिता और वी. रोण्डा द्वारा शीतित संग्रहण के दौरान पेंगासीस (पेंगासीनोडॉन हाइपोफथलमस) सुरीमी से पुन संरचित उत्पादों की गुणता पर काइटोसैन संयोजन का प्रभाव
21. दिव्य के. विजयन, वी. सुष्मीता, मथन माथ्यू, के.वी. विष्णु आर. आनन्दन और सुशीला माथ्यु द्वारा भारतीय जल में उपलब्ध सेंट्राफोरस स्कैलप्रटस जिगर का एन्टी-पेरेटीक एवं प्रतिघाव सिक्रयता का मूल्यांकन
22. के.वी. विष्णु, के.के. अजीश कुमार, सुवानीस कुमार, जी. रमणी और सुशीला माथ्यु द्वारा न्यूरोब्लस्टोमा पर ईकीनोरीनस ब्रूकस (ब्रम्बील शार्क) से जिगर तेल का साइटोटोक्सीक मूल्यांकन
23. के.के. अजीश कुमार, के.वी. विष्णु, के.के. विनेश, के.आर. रम्या कुमारी, जी.एस. सिद्दय्य, टी.वी. शंकर और सुशीला माथ्यू द्वारा भारतीय ई ई जेड़ से चयनित गहर सागर मत्स्यों का जैव खनिज एवं लेश धातु प्रोफाइलिंग
24. सुशीला माथ्यू, मथन माथ्यू, जी.एम. सिद्दय्य के.के. आशा, एन.एस. चाटर्जी और आर. आनन्दन द्वारा भारतीय ई ई जेड से चयनित गहर सागर जातियों का जैव रसायनिक एवं पोषण्विक प्रोफाइलिंग
25. पी.के. बिन्सी, नताशा नायक, पी.सी. सरकार एवं जॉर्ज नैनान द्वारा जीलेटीन-गाम पॉलीमेट ब्लेण्ड का जीलेशन एवं कार्यात्मक लक्षण चित्रण
26. पी.के. बिन्सी, नताशा नायक, ए. जयकुमारी, पी.सी. सरकार और जॉर्ज नैनान द्वारा मत्स्य तेल/सेज अनिवार्य तेल ब्लैण्ड का सूक्ष्म संपुरन : लक्षण चित्रण एवं इन विट्रॉ केनेटीक्स की रिहाई
27. पी.के. बिन्सी द्वारा मत्स्य छिलके से जेलेशन का सूक्ष्मतरंग सहायक निष्कर्षण
28. आर. आनंदन, बी. गणेशन, एन. दण्डापनी, के.के. आशा एवं सुशीला माथ्यू द्वारा चूहों में माइओकार्डीयल इन्फ्रेक्शन प्रायोगिक रूप में प्रेरित में मीटोकोन्डीयल क्रिया पर स्कवालीन एवं ड्ब्लयू-3 बहु असंतृप्त वसा अम्ल का आहारीय प्रभाव
29. फमीना हसन, के.के. आशा, के.वी. निजा और टी.वी. शंकर द्वारा शीतित संग्रहण के दौरान कैरनेक्स मेलाम पीगस (कूवीर, 1833) में भौतिक-रासायन गुणता परिवर्तन
30. पारेश एस. खनोलकर, वी.आर. मधु, लीला एड्विन, मरवीन फरनाडेस, एस.के. घोष और एन. वासुदेवन द्वारा वर्ग मेश कोडएन्ड ट्रॉल उद्योग को फायदा-सिंदूदुर्ग जिला, महाराष्ट्रा में एक मामला अध्ययन
31. वी. सुष्मीता, दिव्य के. विजयन, जी. उषा रानी, एन. एस. चाटर्जी, के.के. आशा, सुशीला माथ्यू, सी.एन. रविशंकर और आर. आनन्दन द्वारा भारत के दक्षिण पूर्व तट से एकत्रित चयनित समुद्रीशैवाल का एन-3/एन-6 बहु असंतृप्त वसा अम्ल प्रोफाइल (पी यू एफ ए) और प्रतिऑक्सीकरक संरक्षा संभावनाएं
32. एम.वी. बैजू एवं लीला एड्विन के द्वारा हरित मत्स्यन के लिए सौर यान
33. पी. प्रवीन, एम.पी. रमेशन, वी.आर. मधु, जी. राजेश्वरी, यू. श्रीधर, के.के. प्रजित और के. करन के द्वारा भारत में यंत्रीकृत ट्रॉलरों के लिए के मा प्रौ सं अर्ध वेलापवर्ती ट्रॉल प्रणाली की लोकप्रियता
34. के. शैनी, जॉर्ज नैनान, जी.एस. हेमा और सुशीला माथ्यू के द्वारा स्कोम्बेराएडीस लइसॉन और इपीनी फीलस मलबलरीक्स त्वचा जेलेशन आधारित खाद्यनीय फिल्म का लक्षण-चित्रण
35. टी.के. अनुपमा, एस.जे. लाली, एस. संजीव, और टी.वी. शंकर के द्वारा कोचिन में वाणिज्यिक रूप में उपलब्ध शुष्क मत्स्य की जैव रासायनिक एवं सूक्ष्मजीवीय गुणता
36. साली एन. थॉमस एवं पी. प्रवीन के द्वारा भारतीय मनोरंजन मत्स्यन क्षेत्र की स्थिति
37. पी.के. महटो, पी.एच. डिजू दास और लीला एड्विन के द्वारा संभाल मात्स्यिकी के लिए कार्बन फुटप्रिन्ट की कमी
38. एस. रम्या, सी.ओ. मोहन, जॉर्ज नैनान, ए.ए. सैनुद्दीन और जी.के. शिवरामन के द्वारा शीतित संग्रहित मत्स्य स्टीक की गुणता पर नानो काइटोसैन एवं ड्रॉमस्टीक गाम संयोजन खाद्य प्रलेपन का प्रभाव
39. निकिता गोपाल, लीया जयलाल, पी. श्रुति और बी. मीनाकुमारी के द्वारा मात्स्यिकी में मूल्य श्रृंखला पर लिंग परिप्रेक्ष
40. टॉम्स सी. जोसफ, वी. मुरूगादास एवं के.वी. ललिता के द्वारा जीवाणुवीय सेल्यूलोस के अधिक उत्पादन के लिए एसीटोबेक्टर घनेन्सीस किण्वन स्थिति का अनुकूलन
41. एस.के. पाण्डा, सी.के. कमलाकांथ, के. आशोक कुमार, टी.वी. शंकर और जे. बिन्दु के द्वारा उच्च दाब उपचारित येल्लोफीन ट्यूना में जैव-जनिक एमीनो विकास एवं सहायक सूक्ष्म वनस्पजात का निरोध

42. के.ए. सयाना, पी.एच. डिजू दास एम.पी. रमेशन और लीला एड्विन के द्वारा भारतीय तट में वाणिज्यिक ट्रॉल का कर्षण का अकलन एवं कर्षण कमी पर आर्थमेथीकल अध्ययन
43. पी.के. बिन्सी, ए.ए. सैनुद्दीन और सी.एन. रविशंकर के द्वारा मत्स्य आँख की पुतली से क्रिस्टालीन प्रोटीनों की वियुक्ति एवं आंशिक लक्षण चित्रण
44. एन.एस. चाटर्जी, के.के. आशा, के. अशोक कुमार, आर. आनंदन और सुशीला माथ्यू के द्वारा थीएमीन एवं पैरीडोक्सीन के वहक प्रणाली के रूप में काइटोसैन फेरूलेट का खाद्यनीय प्रति ऑक्सीकरक एवं प्रतिसूक्ष्मजीवीय सूक्ष्मस्फेरस
45. सी.ओ. मोहन, एस. श्रीजित, जॉर्ज नैनान, सी.एन. रविशंकर और टी.के. श्रीनिवास गोपाल के द्वारा खाने के लिए तैयार ट्यूना कढ़ी का वसा अम्ल प्रोफाइल एवं लिपीड ऑक्सीकरण पर समुद्री शैवाल का प्रभाव
46. एन.आर. स्मिता एवं एस. संजीव के द्वारा हलोफीलीक रोगजनक विब्रियों के चयनित जातियों पर डिस्इनफेक्टेन्ट्स का प्रभाव
47. आर. नवनीथन, के.आर. रम्याकुमारी के.के. अजीश कुमार सुशीला माथ्यू, एम.पी. रमेशन एवं आर. आनन्दन के द्वारा अ-खद्यनीय मइक्टोफीड मत्स्य जातियों की ड्ब्ल्यू-3 बहुअसंतृप्त वसा अम्ल मात्रा
48. ई.एस. सुमी, आर. नवीनीथन, सुशीला माथ्यू, के.वी. ललिता, एम. नासर, एस. आशालता और आर. आनन्दन के द्वारा मत्स्य तेल नमूना ड्ब्ल्यू-3 ड्ब्ल्यू-6 बहुअसंतृप्त वसा अम्ल का आहारीय संपूरण प्रोफाइल एवं बायलर चिकन में पोषण्विक गुणता
49. एस.एस. शाजू, अनीश ए. लोटीलीकर, एस.के. बलियार सिंह, पी. मिनु, पी. मोहम्मद, अशराफ और बी. मीनाकुमारी के द्वारा दूर दक्षिण पूर्वी अरब सागर के तटीय जल में पादप्लवकीय, जीवद्रव्य पर पर्यावरणीय नियंत्रण पर लम्बी अवधि समय श्रृंखला अध्ययन
50. यू. पार्वती, ए. जयकुमारी, ए.ए. सैनुद्दीन और जॉर्ज नैनान के द्वारा स्क्विड साइलेज की तैयारी एवं गुणता मूल्यांकन

- **डॉ. टी.वी. शंकर**, प्र अ, गु आ प्र - उन्नत भाषण श्रृंखला, कुसाट, कोची (10 फरवरी)। इस कार्यक्रम में डॉ. शंकर "रसायन संकट के संदर्भ में खाद्य सुरक्षा के मामलों" पर एक आमंत्रित भाषण प्रदान किया।
- **डॉ. टी.वी. शंकर,** प्र अ, गुआ प्र-एफ एस एस ए आइ के जैवविज्ञान पर वैज्ञानिक पेनल, नई दिल्ली (20 मार्च)
- **डॉ. ए.ए. सैनुद्दीन,** कार्यकारी प्र अ, म सं और अभि और **श्री सी.आर. गोकुलन,** सहा. मुख्य तक अधिकारी कोचिन सौर नगर कार्यक्रम की पणधारी बैठक, कोची (14 जनवरी)
- **डॉ. लीला एड्विन,** कार्यकारी प्र अ, म प्रौ-संतर्कता अधिकारियों की समीक्षा बैठक, भा कृ अनु प-के खा ज सं, चैनई (24 जनवरी)।
- **डॉ. लीला एड्विन,** कार्यकारी प्र अ, म प्रौ और **डॉ. पी. प्रवीन,** प्रधान वैज्ञानिक उष्णकटिबंधी सागरों के लिए हरित मत्स्यन प्रणालियाँ पर एन ए एस एफ की समीक्षा समिति की बैठक, नई दिल्ली (12 फरवरी)।
- **डॉ. एम.एम. प्रसाद,** प्र वै, विशाखपट्टणम और **डॉ. टॉम्स सी. जोसफ,** वरिष्ठ वैज्ञानिक-"छोटे किसानों के लिए संभाल जीविका सुरक्षा" पर 12 वां कृषि विज्ञान कॉग्रेस, भा कृ अनु प-रा डे वि सं, करनाल (3-6 फरवरी)। डॉ. प्रसाद इस सम्मेलन में निम्नलिखित आमंत्रित भाषण प्रदान किए :

  1. लघु मत्स्य उत्पादों के लिए अल्प लागत संसाधन एवं संवेष्ठन प्रौद्योगिकियाँ
  2. छोटे किसानों के लिए यंत्रीकरण एवं पश्च प्रग्रहण प्रौद्योगिकियाँ

  डॉ. टॉम्स सी. जोसफ इस कॉंग्रेस में टाम्स सी. जोसफ, कुट्टन कार्तिक और के.वी. ललिता के द्वारा "झींगा विषाणु के खोज के लिए अल्प लागत निदानीय सूक्ष्म आमपन का विकास" शीर्षक एक पोस्टर प्रस्तुत किया।
- **डॉ. एम.एम. प्रसाद,** प्र वै, विशाखपट्टणम-कृषि व्यापार नवोन्वेषण और संविदा अनुसंधान पर वैश्विक सम्मेलन, विशाखपट्टणम (3 फरवरी)।
- **डॉ. एम.एम. प्रसाद,** प्र वै, विशाखपट्टणम-आँध्रा प्रदेश में महिलाओं के लिए विज्ञान पत्राकारिता पर प्रशिक्षण कार्यशाला, आँध्रा विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम (25 मार्च)। डॉ. प्रसाद इस कार्यशाला में "भोजन में खाद्य के रूप में मत्सय का महत्व एवं पत्राकिरता के द्वारा खाद्य के रूप में मत्स्य को प्रोन्नत करने की वैज्ञानिक पहल" पर एक भाषण भी प्रदान किया।
- **डॉ. जी.के. शिवरामन,** प्र वै, वेरावल-लोकवाणी रेडियो परामर्श समिति बैठक, कोडिनर (3 फरवरी)।
- **डॉ. एल.एन. मूर्ति,** प्र वै, मुम्बई-ब्लू पेपर फोरम 2015, भारत जल कृषि पथप्रदर्शक, बेंगलूरू (5-6 फरवरी)।
- **डॉ. एल.एन. मूर्ति** और **डॉ. ए. जयकुमारी,** वैज्ञानिक-10 वां न्यूट्रॉ इंडिया सम्मीट, मुम्बई (18-19 मार्च)।
- **श्री एम. नासर,** प्रधान वैज्ञानिक-अंतः स्थलीय, बंदरगाह यान एवं मत्स्यन जहाज अनुभागिय समिति टेड 18 की 14 वीं बैठक, भा मा ब्यू, नई दिल्ली (9 मार्च)
- **डॉ. साली एन. थॉमस,** प्रधान वैज्ञानिक-नया फिश जाल कारखाना परियोजना कार्यान्वयन के लिए विशेषज्ञ समिति की बैठक, तिरुवनंतपुरम (20 और 27 फरवरी)
- **डॉ. साली एन. थॉमस,**-मत्स्यन/समुद्री उद्देश्य के लिए कपड़ा सामग्री पर भा मा ब्यू की उपसमिति टी एक्स डी 18 की बैठक, सिफनेट, कोची (25 फरवरी)
- **डॉ. साली एन. थॉमस**-भा कृ अनु प-के मा सं वि नोडल अधिकारियों की प्रशिक्षण आवश्यकता मूल्यांकन पर कार्यशाला, भा कृ अनु प-

रा कृ अनु प्र आ, हैदराबाद (26 फरवरी)

- **डॉ. साली एन. थॉमस,**-जैव प्रौद्योगिकी एसोसिएशन की बैठक, सेट पिट्रस कॉलेज, कोलनसेरी (26 मार्च)। डॉ. साली एन. थामस इस बैठक में "संश्लेषी रेशा, समुद्री जैवविविधता के लिए एक उपहार और संरक्षण के लिए जैव प्रौद्योगिकियाँ मध्यस्ताएं" पर एक आमंत्रित भाषण प्रस्तुत भी की।
- **डॉ. एम.पी. रमेशन,** प्रधान वैज्ञानिक-तमिल नाडू एवं पण्डिचेरी के लिए मात्स्यिकी सह-प्रबंध रणनीति के विकास पर एफ ए ओ-टी सी पी विषय कार्यशाला, चैनई (10-11 फरवरी)
- **डॉ. एम.पी. रमेशन,** प्रधान वैज्ञानिक–परम्परागत ज्ञान पर कार्यशाला, कण्णूर (14 फरवरी)। डॉ. रमेशन इस कार्यशाला में "मात्स्यिकी में परम्परागत ज्ञान" पर एक आमंत्रित भाषण भी प्रस्तुत किया।
- **डॉ. निकिता गोपाल,** प्रधान वैज्ञानिक-जलकृषि में लिंगः मात्स्यिकी एवं जलकृषि मूल्य श्रृंखला पर समानता एवं सशक्तिकरण पर संगोष्ठी बेंकॉक, थाईलेंड (24-25 फरवरी)। डॉ. निकिता गोपाल इस संगोष्ठी में "जलकृषि एवं मात्स्यिकी में लिंग चुनौतियाँ" पर एक अग्रीणी प्रस्तुतीकरण भी की।
- **डॉ. निकिता गोपाल,** प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ. एस.के. पाण्डा**, वरिष्ठ वैज्ञानिक-मत्स्य उत्पादों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कार्यशाला, कुसाट, कोची (4-7 मार्च)। उनके द्वारा निम्न लिखित आमंत्रित भाषण भी प्रस्तुत किए गए:

  1. व्यापार के रोधक - डॉ. निकिता गोपाल
  2. खाद्य सुरक्षा विनियमन एवं समरसता - डॉ. एस.के. पाण्डा
- **डॉ. आर. रघु प्रकाश,** प्रधान वैज्ञानिक एवं **डॉ. एम.एस. कुमार,** मुख्य तक. अधिकारी - कछुवा त्योहार, श्रीककुलम (6-7 जनवरी)। वे समुद्री कछुवे के संरक्षण के लिए सिफ्ट-टेड की प्रयुक्ति पर जानकारी कार्यक्रम-सह-निर्दशन भी संचालित किए।
- **डॉ. यू. श्रीधर,** वरिष्ठ वैज्ञानिक-पांचवीं प्रयोक्त अन्योन्यक्रिया कार्यशाला, इन्कोएस, हैदराबाद (3 मार्च)
- **डॉ. आर. आनन्दन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक-समुद्री जैव प्रौद्योगिकी में नए विस्तास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, वेल्स विश्वविद्यालय, चेन्नई (28 फरवरी)। आर. आनन्दन, सुशीला माथ्यू, के.के. आशा, एन.एस. चाटर्जी और जी.एम. सिद्धय्या के द्वारा "समुद्री जैव अणुओं का न्यूट्रॉसीटीकल एवं जैव औषधीय अनुप्रयोग" पर एक आमंत्रित भाषण भी दिया।
- **डॉ. टाम्स सी. जोसफ,** वरिष्ठ वैज्ञानिक-विकासशील देशों में खाद्य सुरक्षा के लिए जल कृषि को विकास करना, विकास एवं गरीबी उन्मूलन, आर जी सी बी टी, तिरुवनंतपुरम (23-27 फरवरी)
- **डॉ. टाम्स सी. जोसफ,** (संकाय सदस्य के रूप में) **श्री रंजित कुमार नदेल्ला,** वैज्ञानिक **श्री. के.के. आजीश कुमार** और **श्री के.वी. विष्णु,** वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता-विषाणु बीमारी निदान के लिए फिनफिश कोशिका लाइन के विकास पर अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, पी एम एफ जी आर, कोची (23-28 फरवरी)। डॉ. टॉम्स सी. जोसफ इस कार्यक्रम में "खाद्य जान्य रोगजनकों के खोज के लिए अण्विक पद्धतियाँ" पर एक भाषण प्रदान किया।
- **डॉ. वी.आर. मधु,** वरिष्ठ वैज्ञानिक-मात्स्यिकी क्षेत्र एवं तटीय विकास पर संगोष्ठी आलपुष़ा (17 फरवरी)। डॉ. मधु इस संगोष्ठी में "भारत में मत्स्यन प्रौद्योगिकी का विकास-के मा प्रौ सं का योगदान" पर एक आमंत्रित भाषण प्रदान किया।
- **डॉ. वी.आर. मधु,** वरिष्ठ वैज्ञानिक-बी आर जे ई डी परियोजना की राज्य परियोजना स्टेरिंग समिति की बैठक, मुम्बई (23 फरवरी)
- **श्री वी. राधाकृष्णन नायर,** वैज्ञानिक-भारत में प्रमुख फसलों के पदारियों का प्रग्रहण एवं पश्च प्रग्रहण मात्रात्मक मूल्यांकन पर दुबारा अध्ययन" के प्रारूप पर विचार करने के लिए विशेषज्ञ-पणधारियों की बैठक, भा प्रौ सं, चैनई (23 जनवरी)
- **श्रीमती पी. जयंती,** वैज्ञानिक-मात्स्यिकी के क्षेत्र में आई सी टी ए एस पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, समेटी, तिरुवंतपुरम (8 जनवरी) (संकाय सदस्य के रूप में)। श्रीमती जयंती इस कार्यक्रम में मात्स्यिकी के विपणन में ई-वाणिज्य एवं व्यापार पर एक भाषण दी।
- **श्रीमती आरती आशोक,** वैज्ञानिक-खाद्य सुरक्षा एवं गरीबी उन्मूलन के संदर्भ में संभाल लघु मात्स्यिकी की सुरक्षा के लिए एफ ए ओ के उदार मार्गनिदेशों के कार्यान्वयन पर कार्यशाला, आई सी एस एफ, चैनई (6-7 मार्च)
- **डॉ. वी. मुरुगदास,** वैज्ञानिक-इलक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी : सिद्धांत, अनुप्रयोग और नमूना तैयारी तकनीक पर कार्यशाला, कुसाट, कोची (4-7 मार्च)
- **डॉ. एस. विष्णुविनायगम,** वैज्ञानिक-एस पी एस एस सांख्यिकीय सॉफटवेयर के द्वारा आँकडा विश्लेषण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, भा कृ अनु प-के मा शि सं, मुंबई (24-27 मार्च)
- **डॉ. एन.एस. चाटर्जी, श्रीमती यू. पार्वती, श्रीमती एस.जे. लाली** और **श्री जी. कमाई,** वैज्ञानिक-प्रयोगशाला प्रबंध प्रणाली एवं आंतरिक परीक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, सी ई टी पी, बेंगलूरू (24-24 फरवरी)
- **डॉ. पी.के. बिन्सी,** वैज्ञानिक एवं **कुमारी नताशा नायक,** व अनु अ-वाणिज्यिक विशेष जैव बहुलकों में चालू प्रवृत्तियों पर `राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी, भा कृ अनु प-आई आई एन आर जी, रांची (11-13 फरवरी)। इस विचार गोष्ठी में वे निम्न लिखित अनुसंधान प्रपत्र भी प्रस्तुत किए गए :

  1. पी.के. बिन्सी, ए.ए. सैनुद्दीन और सी.एन. रविशंकर के द्वारा बिहःस्राव जल उपचार के लिए सतह संशोधित एवं पुन प्रबलित मत्स्य त्वचा पैड्स
  2. पी.के. बिन्सी, ए.ए. सैनुद्दीन और सी.एन. रविशंकर के द्वारा पौधा पॉलीफीनोल्स एवं फ्लवनोड्स के साथ संकट-सहसंबंध मत्स्य जेलेशन जेलों का लक्षण चित्रण
  3. पी.के. बिन्सी, नताशा नायक, पी.सी. सरकार, उपली सहु और जॉर्ज नैनान के द्वारा अरबीक गाम के साथ स्थिरीकृत मत्सय रो चूर्ण के कार्यात्मक गुण
- **डॉ. ए. जयकुमारी,** वैज्ञानिक-खाद्य, कृषि, स्वच्छ एवं पर्यावरण के सूक्ष्मजीव विज्ञान में उन्नतियों पर विचार-गोष्ठी, बा अ प अनु के, मुम्बई (3-5 फरवरी)। डॉ. जयकुमारी इस विचार-गोष्ठी में ए. जयकुमारी,

रेश्मा राय, जार्ज नैनान और ए.ए. सैनुद्दीन के द्वारा "शीतित संग्रहण के दौरान पेंगसीस (पेंगसीनोडॉन हाइपोफाथलमस) टुकड़ों के जैव रसायन एवं संरचनात्मक लक्षण चित्रण पर मसाला सारों का प्रभाव" शीर्षक अनुसंधान प्रपत्र भी प्रस्तुत की।

- **डॉ. पंकज किशोर, श्रीमती यू. पार्वती, श्री टी.के. अनुपमा, कुमारी, एच. मंदाकिनी देवी और श्री करन कुमार के रामटेके,** वैज्ञानिक-वैज्ञानिक अनुसंधान में गुणता सुनिश्चित करने पर राष्ट्रीय कार्यशाला, कुसाट, कोची (7-8 जनवरी)
- **डॉ. पंकज किशोर** और **श्री के. अहम्मद बाशा,** वैज्ञानिक स्वच्छ एवं संसाधित एक्वा फुड्स में सूक्ष्मजीवीय संकट मूल्यांकण पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, एफ सी एवं आर आई, टूटीकोरीन (26 फरवरी 18 मार्च)
- **श्री रंजीत कुमार नडेल्ला,** वैज्ञानिक, **श्री के.वी. विष्णु श्री के.के. अजीश कुमार, श्री के. ऋशीनंदा राव, कुमारी वी. प्रेमा राजू** और **कुमारी एस. लवण्य,** अनुसंधान अध्येता-आण्विक चिन्ह्क पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, कोची (9-14 फरवरी)
- **श्री रंजीत कुमार नडेल्ला,** वैज्ञानिक-सूक्ष्मजीवीय प्रणालियाँः मृदा का श्रेणीकरण पर कार्यशाला, सी एस आई आर आई आई एम टी, चढ़ीग़ढ (2-12 मार्च)
- **डॉ. ए.आर.एस. मेनोन,** मुख्य तक. अधिकारी-राष्ट्रीय ई-शासन योजना (एन ई जी पी)-कृषि एवं अनुबद्ध क्षेत्रों (प्राणी-विज्ञान, पशुविज्ञान और मात्स्यिकी में नवोन्वेषी/उत्तम व्यवहारों पर प्रशिक्षण कार्यशाला, पोर्टब्लेयर, अंदमान एवं निकोबर द्वीप (24-26 मार्च)
- **श्रीमती पी.के. षैमा,** सहा. मुख्य तक. अधिकारी और **श्रीमती एन. सी. शैला,** व तक. सहा.-"ओरक्ल ई आर पी की प्रयुक्ति से कार्यालय ऑटोमेशन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, भा कृ अनु प-आइ ए एस आर आई, नई दिल्ली (16-20 मार्च)
- **डॉ. संतोष अलेक्स,** वरिष्ठ तक. अधिकारी और **डॉ. पी. शंकर,** तक. अधिकारी-क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दक्षिण एवं दिक्षण पश्चिम) मैंगलूरू (27 मार्च)
- **श्री पी.एस. नाबी,** तक. अधिकारी-तकनीकी सहायकों के लिए 6 वां क्षमता निर्माण कार्यक्रम, आई आई पी ए, नई दिल्ली (2-13 फरवरी)
- **श्रीमती पी. श्रुति** और **श्रीमती लीया जयलाल,** व अनु अर्थिक सुधार, वृद्धि और संभाल विकासः संस्थानों की परिवर्तित भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड (16-18 फरवरी)। वे पी. श्रुति, लीया जयलाल एवं निकिता गोपाल के द्वारा "केरल में पोक्काली से झींगा एकल पालन की बदली के एक लिंग परिप्रेक्षा" शीर्षक अनुसंधान प्रपत्र प्रस्तुत किए।
- **श्री एम.एम. लीजिन नम्बीयार** और **श्री राहुल रवीन्द्रन,** क अनु अ, मात्स्यिकी में आधुनिक सांख्यिकीय औज़ार-सीसटेट-13 का अनुप्रयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, कुसाट, कोची (26-27 फरवरी)

व्यक्तिगत

नियुक्तियाँ

1. श्री राकेश एम, राघवन, तकनीकी सहायक (क्षेत्र/फार्म), भा.कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची
2. श्रीमती पी. श्रुति, तकनीकी सहायक (क्षेत्र/फार्म), भा.कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची
3. श्रीमती परीणीता, तकनीकी सहायक (प्रयोगशाला तकनीशियन), भा.कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची
4. श्री राहुल रवीन्द्रन, तकनीकी सहायक (प्रयोगशाला तकनीशियन), भा.कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची
5. श्रीमती वी. सुष्मीता तकनीकी सहायक (प्रयोगशाला तकनीशियन), भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, वेरावल अनु के

प्रोन्नोतियाँ

1. श्रीमती एस. कमलम्मा, नि स, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची निजी सचिव के रूप में
2. श्री टी.एन. षजी, उ श्रे लि, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची सहायक के रूप में
3. श्रीमती के.वी. सुशीला, नि श्रे लि, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची उ श्रे लि के रूप में
4. श्री पी. रजीव, नि श्रे लि, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची उ श्रे लि के रूप में

स्थानांतरण

1. श्री वी.के. प्रधान, सहा मुख्य तक. अधिकारी, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची से भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं का विशाखपट्टणम अनु के
2. कुमारी मेघा चोपड़ा, सहायक, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची से भा कृ अनु प-आइ ए एस आर आई, नई दिल्ली

सेवानिवृत्ती

1. डॉ. एस. बालसुब्रमणियम, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्र अ, विस्तार, सूचना एवं सांख्यिकी, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची
2. श्री थॉमस टेलस, तक. अधिकारी, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची
3. श्री सी. राजेन्द्रन, तक. अधिकारी, भा कृ अनु प-के मा प्रौ सं, कोची

Published by: Dr. C.N. Ravishankar, Director, ICAR-Central Institute of Fisheries Technology, Matsyapuri P.O., Cochin – 682 029.
Ph: 0484-2412300; Fax: 0484-2668212; E mail: cift@ciftmail.org; Website: www.cift.res.in. Compiled by: Dr. A.R.S. Menon
Translated by: Dr. P. Shankar, Photo Editing: Shri Sibasis Guha/Shri K.D. Santhosh, Printed at: PrintExpress, Cochin - 17